

# संसार से परमधाम की ओर

लेखक

सरोज सापकोटा

सिक्किम

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा  
जिला-सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

फोन नं०-01331-244890, 8650851010

वेबसाइट: [WWW.SPJIN.ORG](http://WWW.SPJIN.ORG)

यू-ट्यूब चैनल: [SPJIN](https://www.youtube.com/SPJIN)

ईमेल: [shriprannathgyanpeeth@gmail.com](mailto:shriprannathgyanpeeth@gmail.com)

## सर्वाधिकार :

प्रकाशकाधीन—इस पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री सत्वाधिकारी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, श्री प्राणनाथ ज्ञान पीठ ट्रस्ट के पास सुरक्षित है। अतः किसी भी व्यक्ति या संस्था के द्वारा इस पुस्तक का नाम, फोटो, कवर डिजाइन एवं प्रकाशित लेख इत्यादि को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र या वेबसाइट में प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक की अनुमति लेना अनिवार्य है, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे खर्चे के जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमे के लिए न्याय क्षेत्र सरसावा, जिला सहारनपुर ही होगा।

## प्रथम संस्करण :

1000 प्रतियां, जनवरी, 2019

## मुद्रक :

ज्ञानपीठ मुद्रणालय  
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ  
सरसावा, सहारनपुर  
उत्तर प्रदेश, भारत

## दो शब्द

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी एवं धर्मप्रेमी जिज्ञासु जन ! आज का युग भौतिक चकाचौंध के पीछे भागने वाला युग है। वर्तमान समय पर समाज की स्थिति को देखते हुए यही अनुभव किया जा सकता है कि आज का मानव सम्पूर्ण लौकिक चाहनाओं को पाकर तृप्त हो जायेगा।

परन्तु, जिसकी यथार्थ में धर्ममार्ग में रुचि है उसकी अंतर्आत्मा से तो यही आवाज निकलती है कि—मैं कौन हूँ ? मैं इस संसार में कहां से आया हूँ ? संसार में दुख का अनुभव क्यों कर रहा हूँ ? क्या इस दुखरूपी बंधन से पृथक् होने का मार्ग नहीं है ? मैं किसके शरण में जाऊँ, जहां जाने से मुझे सुख, शान्ति, आनंद, अभय की प्राप्ति होगी। जैसे मुझे यह जन्म मिला है ऐसे ही जन्म पता नहीं कब से मिल रहा होगा। क्या, इस जन्म-मरण रूपी बंधन से पृथक् होने का मार्ग नहीं है। इत्यादि प्रश्न जिसके मन में उभरने लगते हैं वही मानव शाश्वत सत्य की खोज में निकल पड़ता है।

ऐसे पिपासु जनों के लिये यह “संसार से परमधाम की ओर” नामक पुस्तक उपयोगी होगी। यह मेरी आशा है। इस पुस्तक का लेखन कार्य श्री सरोज जी सुन्दरसाथ सिक्किम ने की है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में ऐसे ही उपयोगी पुस्तकों के माध्यम से आप समाज को लाभान्वित करते रहेंगे। इस पुस्तक के संशोधन की सेवा श्री दीपक पंवार जी दिल्ली ने की है। मैं श्री राजजी के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि अपनी कृपा हमेशा उनके ऊपर करते रहें और निरन्तर साहित्य के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करते रहें। इसी कामना के साथ.....।

आपका

राजन स्वामी

## अनुभूमिका

धर्मप्रेमी सज्जनों निजानन्द दर्शन के बारे में समझाने के लिए स्वरूप साहिब, बीतक साहिब, चर्चनी और विराट पट बहुत सहायक हैं। इस पुस्तक में विराट पट के बारे में कुछ लिखने का प्रयास किया गया है। जब हम कही जाते हैं तो विराट पट के द्वारा अच्छी तरह से लोगों को समझाया जा सकता है। तो मेरे मन में ये विचार आया कि क्यों न विराट पट के बारे में एक पुस्तक लिखी जाये जिससे सभी सुन्दरसाथ एवं भक्त जनों को लाभ मिले। संसार से परमधाम नामक इस पुस्तक के माध्यम से शाश्वत सत्य को दर्शाने का प्रयास किया गया है। वैसे इस पुस्तक के मूल में तो मेरे सतगुरु परम पूज्य श्री राजन स्वामीजी ही निहित हैं। मैं तो केवल एक माध्यम हूँ। स्वामीजी पल पल मेरा मार्गदर्शन करते रहे। इस कार्य को करने में ब्रह्मलीन १०८ श्री मंगलदास गुरुजी (बड़े गुरुजी) का आशीर्वाद भी पल पल मेरे ऊपर बरसता रहा। मैं आशा करता हूँ कि ये पुस्तक आपको रूचिकर लगेगी।

यदि आप को इस पुस्तक में कुछ त्रुटियां मिले तो हमें सूचित करने का कष्ट करें।

आपका शुभेच्छु  
सरोज दीप सापकोटा  
रानिपूल, सिक्किम  
भारत

## अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय..... १

१. क्या आप सभी दुःखों से मुक्ति पाना चाहते हैं ?
२. आखिर ये चौदह लोकों का स्थान कहां हैं ?
३. आदिनारायण को किसने उत्पन्न किया ?
४. ये ब्रह्माण्ड कितना बड़ा है आधुनिक विज्ञान के दृष्टि में ?

द्वितीय अध्याय..... २३

५. धर्मग्रन्थों में ध्यान से संबंधित बातें ।
६. क्या परमात्मा दुःखी होते हैं ? वो रोते हैं ?
७. धर्मग्रन्थों के अनुसार परमात्मा का सफेद घोड़े में आना ।

तृतीय अध्याय..... २८

८. परब्रह्म का प्रकटन ।  
(विभिन्न धर्मग्रन्थों के प्रमाणों के द्वारा)

चतुर्थ अध्याय..... ४४

९. अखंड मुक्ति के आठ स्थान ।

अखण्ड

अखण्ड  
परमधाम

जमुना जी

अखण्ड  
अक्षरधाम

सतस्वरूप ब्रह्म  
केवल ब्रह्म  
सबलिक ब्रह्म  
(अखंड ब्रज-रास लीला)  
अव्याकृत ब्रह्म

सतलोक  
तपलोक  
जनलोक  
महर्लोक  
स्वर्गलोक  
भूवर्लोक  
भूलोक (मृत्यु लोक)  
अतल  
वितल  
सूतल  
तलातल  
महातल  
रसातल  
पाताल

संसार से परमधाम तक का मानचित्र

## प्रथम अध्याय

धर्मप्रेमी सज्जनों आप सोच रहे होंगे कि ये जो नक्शा आप देख रहे हैं ये क्या हैं ? आप सभी ने एटलस तो देखा होगा, एटलस से पता चलता है की कौन सा देश कहां है । ये संसार तो एटलस के मुकाबले बहुत बड़ा है लेकिन सारे संसार को एक कागज में दरसाया जाता है । यूं समझ लीजिये कि ये भी उसी तरह का एक आध्यात्मिक मानचित्र है जिससे पता चलता है कि किसकी भक्ति करने से कहां तक पहुंच सकते है ।

मैं आप सब से एक प्रश्न करना चाहता हूं ।

प्रश्न—क्या आप सब दुःख से मुक्ति पाना चाहते हैं ?

उत्तर—जी हां ।

सभी दुःख से मुक्ति पाना चाहते हैं । लेकिन मुक्ति किस तरह से मिलेगी ? क्या हमने इस विषय में विचार किया है ? और क्या कोई आज दिन तक दुःख से निवृत्त हो पाया है ? तो इस प्रश्न के उत्तर में कपिल जी ने सांख्य दर्शन ६/७ में कहा है—

**कुत्रापि कोऽऽपि सुखी न—**यानि कि कोई भी कहीं भी सुखी नहीं है । तो सुख पाने का साधन क्या है, मुक्ति पाने का साधन क्या है इस पर जरा विचार करते हैं । धर्मग्रंथों का कथन है ऋते ज्ञानात् न मुक्ति; अर्थात् जब तक हम ज्ञान प्राप्त नहीं करते तब तक हमें मुक्ति नहीं मिलेगी । लेकिन कैसा ज्ञान ? आप संसार में देखिये एक गरीब परिवार का लड़का है । उस परिवार में बहुत कष्ट में हैं, घर के पिता किसी तरह से मजदूरी कर के दो वक्रत की रोटी मुश्किल से जुटाता है, कभी-कभी कई दिनों तक भूखे रहना पड़ता है ।

अब वो लड़का सोचता है कि किस तरह से मैं अपने परिवार के दुःख, कष्ट को दूर करूं ? यह सोच के वो स्कूल जाने लगता है, पढ़ लिख के काबिल बन जाता है, अच्छी नौकरी मिलती है और कमाई भी

अच्छी होनी लगती है। घर में अब किसी को भूखा नहीं रहना पड़ता। उसकी विद्या उसके परिवार को गरीबी से मुक्ति दिलाने में सहायक बनी। इस संसार में उसने जो सांसारिक ज्ञान अर्जित किया उस ज्ञान की मदद से उसे गरीबी से निजात पाने में सहायता मिली। ये तो संसार की बात हुई लेकिन क्या जो जीव लाखों जन्म से भिन्न-भिन्न योनियों में जन्मता और मरता है, जन्म-मरण के कष्टों से गुजरता है, उस कष्ट से उसको मुक्ति कैसे मिले? ऐसा कौन सा उपाय है जिस के करने से उसको इस जन्म-मरण रूपी कष्टों से मुक्ति मिले और शाश्वत शांति, शाश्वत आनन्द की प्राप्ति हो। यदि उसको अपनी मुक्ति की चिंता हो, मोक्ष पाना चाहता हो, तो उसे धर्म की शरण में जाना होगा, इसके लिए उसे चाहिए की वो धर्मग्रन्थों में निहित सच्चे ज्ञान को जाने और उसका अनुसरण करके अपना कल्याण करे ताकि उसको शाश्वत सुख की प्राप्ति हो और ये सब हम सिर्फ मनुष्य योनि में ही प्राप्त कर सकते हैं। जीव को यदि अपना कल्याण करना हो तो उसको ये सोच आनी चाहिए कि आखिर में मुझे ये मनुष्य तन किस लिए प्राप्त हुआ है? मनुष्य योनि प्राप्त कर के मेरा परम कर्तव्य क्या है? देखिये शास्त्र भी क्या कहते हैं—

बड़े भाग मानुष तन पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन्हि गावा ।  
साधन धाम मोक्षकर द्वारा । पाई न जेहिं परलोक संवारा । सो परत्र  
दुःख पावई, सिर धुनि धुनि पछिताई। कालहि कर्महि इश्वरहि मिथ्या  
दोष लगाई । (श्री राम चरित मानस उत्तर काण्ड) ।

**God created mankind in his image; in the image of  
God he created them; male and female; he created them.  
(Bible Genesis 1 : 27)**

परमात्मा ने मनुष्यों को अपने ही रूप में बनाया ।

गायन्ति देवाः किल गीतिकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे ।  
स्वर्गापवर्गास्पद - मार्गभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

(विष्णु पुराण)



देवता गीत गाते हैं कि स्वर्ग और अपवर्ग की मार्गभूत भारत भूमि के भाग में जन्मे लोग देवताओं की अपेक्षा भी अधिक धन्य हैं ।

**दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार,  
तरुवर ज्यों पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार । (कबीर वाणी )**

इस संसार में मनुष्य का जन्म मुश्किल से मिलता है । यह मानव शरीर उसी तरह बार-बार नहीं मिलता जैसे वृक्ष से पत्ता झड़ जाए तो दोबारा डाल पर नहीं लगता ।

जो कोई भी यदि किसी की हत्या करता है तो समझ लेना कि वो सारी मानवता का हत्यारा है और जिस किसी ने एक मानव को बचाया है उस ने सारे मानवता को बचाया है । (कुरान ५ : ३२)

मनुष्य तन पाकर हमारा परम कर्त्तव्य बनता है कि हम स्वयं को जाने कि हम कौन हैं, जिसने इस सृष्टि की रचना की वो परमात्मा कौन है और वो कहां है ?

**अथातो ब्रह्म जिज्ञासा (वेदान्त सूत्र १.१.१) अर्थात् ब्रह्म जानने का विषय है ।**

इस संसार में बहुत सारे लोग मिलेंगे जो किसी न किसी रूप में किसी न किसी की भक्ति करते हैं । आखिर हम भक्ति क्यों करते हैं ? अधिकतर लोग तो अपने इष्ट से डरते हैं कि कहीं हम भक्ति नहीं करेंगे तो हमारा अनिष्ट न हो जाये, डर के अधीन होकर के भक्ति कर रहे हैं, सारा जीवन ऐसे ही बिता देते है । कितने तो ऐसे हैं जो अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए भक्ति करते हैं कहते हैं कि हे परमात्मा ! हमें गाड़ी दो, बंगला दो, नौकरी दिला दो, बेटी की शादी अच्छे घर में हो और न जाने क्या क्या, सारा जीवन भीख मांगते रहते हैं और भगवान को भी रिश्वत देते हैं कहेंगे कि आप ने मेरा ये काम कर दिया तो आप को एक किलो लड्डू चढाऊंगा, सोने के कलश बनवाऊंगा, लाख रुपये दान में दूंगा इत्यादि इत्यादि । क्या आप का भगवान एक किलो लड्डू का भूखा है या उसे पैसों की कमी है जो आप उनको खरीदना चाहते हैं ? एक कवि ने क्या खूब लिखा है—

अजब हैरान हूं भगवन, तुम्हे कैसे रिझाऊं मैं,  
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊं मैं ।

करूं किस तौर आवाहन, कि तुम मौजूद हो हर जहां,  
निरादर है बुलाने को, अगर घंटी बजाऊं मैं ।

तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में,  
भला भगवान पर भगवान को कैसे चढाऊं मैं ।

लगाना भोग कुछ तुमको, एक अपमान करना है,  
खिलाता है जो सब जग को, उसे कैसे खिलाऊं मैं ।

तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं, सूरज, चांद और तारे,  
महा अंधेर है कैसे, तुम्हें दीपक दिखाऊं मैं,  
अजब हैरान हूं भगवन, तुम्हें कैसे रिझाऊं मैं ।

यदि ब्रह्म जानने का विषय है तो उसे कैसे जाना जाये । हम ये तो मानते हैं की परमात्मा सत्य है, चेतन है, और आनंदमय है इसी लिए उनको कहते हैं सच्चिदानंद । हम जिस संसार में रह रहे हैं ये संसार असत, जड़ और दुःख रूपी है । अधिकतर लोग स्वर्ग लोक की कामना करते हैं और उसे पाने के लिए लालायित रहते हैं । पौराणिक मान्यता के अनुसार यह ब्रह्माण्ड चौदह लोकों का है, इस संसार से ऊपर छः लोक हैं और नीचे सात पाताल लोक हैं जो नीचे से ऊपर तक क्रमशः इस प्रकार हैं पाताल, रसातल, महातल, तलातल, सुतल, बितल, अतल, भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महरलोक, जनलोक, तपलोक और सतलोक ।

गीता में कहा गया है कि जो जिसकी भक्ति करता है वो उसी में मिलता है—

यान्ति देवव्रता देवान् पितृन्यान्ति पितृव्रताः ।  
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥

(गीता आ० ९.२५)

यानि कि देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं, और मेरा पूजन करने वाले भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं ।

**आखिर ये चौदे लोकों का स्थान कहां है ?**

कहते हैं की पादस्य तले यो देश स पाताल । अर्थात् सबसे ऊंचे स्थान हिमालय पर आदि सृष्टि उत्पन्न हुई थी । इस हिमालय के नीचे जो भाग समुद्र या नदियों के किनारे स्थित है वो पाताल लोक है । पृथ्वी से ऊपर जो छः स्वर्ग लोकों का वर्णन किया जाता है वो लोक पृथ्वी जैसा ठोस लोक नहीं बल्कि सूक्ष्म लोक हैं । भूलोक के ऊपर जो छः लोकों के बारे में वर्णन किया गया है वो वास्तव में सूक्ष्म लोक हैं जो नीचे से लेकर ऊपर तक अधिक सूक्ष्म होते जाते हैं और जिसकी सतोगुण की मात्रा जितनी ज्यादा हो वो उसी प्रकार से ऊपर के लोकों में निवास करता है या यूं कहें की जो जितना अधिक सात्विक होगा उसको ऊपर के लोक प्राप्त होंगे । पृथ्वी से ऊपर स्वर्ग आदि लोकों को दिखाने का तात्पर्य ये है कि पृथ्वी के अपेक्षा ये लोक अधिक सूक्ष्म हैं । जो जितना ज्यादा सूक्ष्म हो उसका स्थान उतना ही ज्यादा ऊपर दर्शाया जाता है ।

ये ब्रह्माण्ड पांच तत्व का बना हुआ है । पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, ये पांच तत्व पृथ्वी से ले के आकाश तक अधिक सूक्ष्म होते जाते हैं । हमारा शरीर भी इन्ही पांच तत्वों का बना हुआ है, इन सब से परे मन, बुद्धि और अहंकार का आवरण है । यही अष्ट रूपों वाली प्रकृति है । कोई कोई इसे अष्ट आवरण भी कहते हैं ।

अष्ट रूपों वाली प्रकृति से ऊपर सात शून्य आता है । सात शून्य से ही सात स्वर्गों की उत्पत्ति हुई है । उसके ऊपर आदि नारायण है जिसे धर पुरुष भी कहते हैं जो निराकार में निवास करते हैं । निराकार या महा शून्य सब को घेर के आई हुई है । (अधिक जानकारी के लिए ब्रह्माण्ड रहस्य ग्रन्थ का अवलोकन करें)

श्री प्राणनाथ जी की वाणी हमें स्पष्ट रूप से बताती है कि एक मात्र उपास्य कौन है, मनुष्य योनि प्राप्त करके हमें किस की भक्ति करनी चाहिए ? और इस सम्बन्ध में संसार में जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं वो क्या कहते हैं ? क्या ये सारे धर्म ग्रन्थ हमें एक परमात्मा की भक्ति करने का आदेश देते हैं या बहुदेववाद की ओर ले चलते हैं ? सारा संसार जिस के आने की बाट देख रहा है आखिर वो कौन है और क्या उसका प्रकटन हो चुका है या उसके प्रकटन में अभी समय शेष है ।

आए आगम वाणी इत मिली, विश्व मुख करत बखान ।  
कौल सबन के पूरन भए, आए सो पाहोंचे निसान ॥

(प्राणनाथ वाणी)

अब आइये देखते है क्षर ब्रह्माण्ड में जितने भी धर्म ग्रन्थ आये वो क्या कहते हैं, सबसे पहले हम वेदों की बात करते हैं । वेदों में परमात्मा के बारे में क्या कहा गया है ?

“य एक इत्तमुष्टुही कृष्टीनां विचर्षणिः । पतिःर्जज्ञे वृषक्रतुः” (ऋग्वेद; ६:४५:१६)

जो परमात्मा एक और अकेला ही है, तू केवल उसी की स्तुति वंदना एवं अनन्यभक्ति कर ।

“य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्येति । इन्द्रः पंचक्षितीनाम्” (ऋग्वेद; १:७:९)

धरती में बसने वाले सारे मनुष्यों का एक और अकेला परमात्मा ही सबको सुख-शान्ति देता है ।

“भुवनस्य यः पतिः एक एव नमस्यः विक्षु ईड्यः”

(अथर्व वेद; २:२:१)

वह केवल एक है जो सारे संसार का एक और अकेला स्वामी है, वही सारी सृष्टि का आराध्य है ।

“वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्य वर्णं तमसः परस्तात्”  
(यजुर्वेद ३१.१८) अर्थात् वो परमात्मा आदित्य वर्ण वाला प्रकाश  
स्वरूप है जिसमें अन्धकार का कोई नामोनिशान नहीं है ।

“एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति नेह नानास्ति किन्चन”  
(कठोपनिषद २.१.११) अर्थात् परमात्मा एक है और एक के सिवा  
कोई और भिन्न नहीं है ।

“शुक्रोऽऽसि भ्रजोऽऽसी” । अर्थात् परमात्मा प्रकाश स्वरूप है,  
दिव्य है ।

“न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते । न पञ्चमो न षष्ठः  
सप्तमो नाप्युच्यते । नाष्टमो न नवमो दशमो नाशयुच्यते । तमिदं  
निगतं सहः सएष एक एक वृदेक एव ॥ सर्वे अस्मिन् देवा” (अथर्व वेद;  
१३:४:१६)

न कोई दूसरा परमात्मा है, न तीसरा और न चौथा कहा गया  
है । न कोई पांचवां परमात्मा है, न छठा और न ही किसी सातवें का  
उल्लेख है । न कोई आठवां परमात्मा है, न नौवें और न ही कोई दसवां  
कथित है ।

वेद हमें एक परमात्मा की भक्ति की और ले जाते हैं ।

नानक साहब भी कहते हैं—

साहिब मेरा एको है । एको है भाई एको है ।

आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह ॥ (प. ३५०)

नानक एको सुमिरो, जन्म-मरण दुःख जाये ।

दूजा काहू को सुमिरे, जन्मिये और मर जाये ॥

नानक देव जी कह रहे हैं की मेरा साहिब (परमात्मा) एक ही  
है और मैं नानक उस एक परमात्मा की भक्ति करता हूं जिसकी भक्ति  
करने से जन्म-मरण रूपी दुःख जायेंगे जो और किसी की भक्ति से  
संभव नहीं है ।

बाइबल भी एक परमात्मा की और इशारा करती है—

**“The LORD our God, the LORD is one”.**

**Deuteronomy 6:4**

“वो परमात्मा हमारा परमात्मा एक है”

**The most important one, “answered Jesus, “is this: “Hear, O Israel: The Lord our God, the Lord is one”.** Mark 12:29

“येशु ने कहा सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि परमात्मा एक ही है”

**For thou art great, and doest wondrous things: thou art God alone. (Psalm 86:10)**

क्योंकि तू महान और आश्चर्य कर्म करने वाला है, केवल तू ही परमेश्वर है।

कुरान भी हमें एक परमात्मा की भक्ति करने का आदेश देता है।

प्राणनाथ वाणी भी हमें एक परमात्मा का ज्ञान देती है—

परब्रह्म तो पूरन एक है, ये तो अनेक परमेश्वर कहावें।

अनेक पंथ सब जुदे जुदे, और सब कोई साख्र बोलावें ॥

(प्राणनाथ वाणी)

रामायण में श्री राम के द्वारा संध्या करने की बात आती है—

लै रघुनाथहिं ठाउं देखावा । कहेउ राम सब भांति सुहावा ।

पुरजन करि जोहारु घर आए। रघुबर संध्या करन सिधाए ॥

(अयोध्या काण्ड)

श्री कृष्णजी द्वारा भी संध्या करने की बात आती है—

कृत्वा पौवाहिक कृत्यं स्नात शुचिरलंकृत ।  
उपस्थे विवस्वन्त पावकंच जनार्दना ॥

श्री कृष्ण जी ने पवित्र वस्त्राभूषणों से अलंकृत होकर  
संध्यावन्दन, सूर्योपस्थान एवं अग्निहोत्र आदि पूर्वाह्नकृत्य सम्पन्न  
किए ।

गीता के अनुसार तीन प्रकार के ब्रह्माण्ड हैं और उनके नियंत्रक  
तीन अलग-अलग पुरुष हैं ।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।  
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।  
यो लोकत्रयमाविश्य विभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥

(गीता अ० १५: १६-१७)

क्षर पुरुष का यह ब्रह्माण्ड नाशवान है, इस से परे अक्षर पुरुष  
का ब्रह्माण्ड यानि योगमाया का ब्रह्माण्ड है । अक्षर ब्रह्म कूटस्थ है और  
उससे भी परे उत्तम पुरुष है और वो ही परमात्मा है जिस की प्रेरणा से  
समस्त ब्रह्माण्ड के जीवों का पालन-पोषण होता है ।

इन तीनों ब्रह्माण्डों में अलग-अलग प्रकार की तीन लीलायें  
होती हैं । क्षर ब्रह्माण्ड में कोई भी वस्तु उत्पन्न होती है और लय को  
प्राप्त होती है । योगमाया के ब्रह्माण्ड में कोई भी नई वस्तु उत्पन्न तो  
हो सकती है लेकिन लय को प्राप्त नहीं होती । और उत्तम पुरुष का वो  
ब्रह्माण्ड जिसे दिव्य ब्रह्मपुर धाम या परमधाम भी कहते हैं वहां न तो  
कोई नई वस्तु उत्पन्न होती है, न कुछ पुराना होता है, न कोई वस्तु  
लय को प्राप्त होती है ।

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया । (गीता ८:२२)

हे अर्जुन तू उस उत्तम पुरुष परमात्मा की अनन्य भक्ति कर ।  
अनन्य का क्या अर्थ होता है एक को छोड़ के किसी और की नहीं और  
वो परमात्मा केवल अनन्य भक्ति से ही प्राप्त हो सकता है ।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।  
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥

(गीता १८:६२)

हे भारत ! तू सब प्रकार से उस परमात्मा की ही शरण में जा ।  
उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा शाश्वत  
परमधाम को प्राप्त होगा ।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज ।  
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

(गीता १८:६६)

हे अर्जुन तू सम्पूर्ण तर्क वितर्क को छोड़ के यदि मुझ में समर्पित  
हो जायेगा तो निश्चित ही तुझे परमतत्व प्राप्त हो जायेगा । इस में  
कोई शंका मत कर ।

श्री कृष्ण पहले कहते हैं कि हे अर्जुन तू उस परमात्मा की  
शरण में जा और फिर कहते हैं कि मेरी शरण में आ, ऐसा क्यों ?  
इसके समाधान में यही कहा जा सकता है की जब श्री कृष्ण ब्राह्मी  
अवस्था में बोल रहे हैं तो उन्होंने कहा कि मेरी शरण में आ और जब  
योगेश्वर कह रहे हैं तो कहते हैं कि तू उस परमात्मा की शरण में जा ।  
जब परमात्मा की शक्ति बुलवा रही होती है तो कहते हैं मेरी शरण में  
आ और जब खुद बोल रहे होते हैं तो कहते हैं की परमात्मा की शरण  
में जा ।

ये तो निश्चित है कि परमात्मा जन्म-मरण के चक्कर में नहीं  
पड़ते, श्री कृष्ण गीता में स्वयं कहते हैं कि—

बहूनि में व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।  
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥

(गीता ४:५)



मेरे और तुम्हारे अनेकों जन्म हो चुके हैं जिन को मैं जनता हूं पर तुम नहीं।

पुराण संहिता में यह वर्णन आता है कि एक बार शिवजी, ब्रह्माजी और विष्णु भगवान को कहते हैं कि हम ध्यान द्वारा इस निराकार के ब्रह्माण्ड को पार करते हैं। ब्रह्माजी प्रश्न करते हैं कि आज दिन तक तो कोई भी इस निराकार के ब्रह्माण्ड को पार नहीं कर पाया है हम कैसे करेंगे तो शिवजी कहते हैं कि मैं जो जो कहता हूं आप वही कीजिये तो हम पार कर पायेंगे। तीनों देव ध्यान में बैठते हैं, रास्ते में उनको ईश्वर और सदाशिव मिलते हैं। पांचों देव एक साथ निराकार के ब्रह्माण्ड को पार करते हैं। योगमाया के ब्रह्माण्ड में पहुंचते हैं। जब वापस लौटते हैं तो दूसरे चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में पहुंचते हैं। उस ब्रह्माण्ड के नारदजी जब ब्रह्मा, विष्णु, महेश को देखते हैं तो पूछते हैं कि आप कौन हैं ? ये कहते हैं कि हम ब्रह्मा, विष्णु, और महेश हैं नारदजी कहते हैं मैं तो अभी ब्रह्मा, विष्णु, महेश से मिलके आया हूं। आप कैसे हो सकते हैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश। ये सुनके दोनों ब्रह्माण्ड के ब्रह्मा, विष्णु, महेश एक दूसरे से मिलते हैं और वहां से लौटते हैं और अपने स्थान पर आते हैं।

देवी भागवत में कहा गया है कि—

**अहम् ब्रह्मा अहम् विष्णु शिवोहम् इति मोहिताः ।  
न जानीमो वयं धातः परम् वस्तु सनातनम् ॥**

अर्थात् हम अपने आप को मैं ब्रह्मा हूं, मैं विष्णु हूं और मैं शिव हूं कह कर मोहित होते हैं लेकिन हम भी उस सनातन वस्तु को नहीं जानते।

अब यहां प्रश्न आता है कि सनातन वस्तु क्या है, किसे सनातन कहा जा सकता है ?

**चिदादित्यं किशोरंगं परे धाम्नि विराजितम् ।  
स्वरूपं सच्चिदानन्दं निर्विकारं सनातनम् ॥**

(ब्रह्मवैवर्त पुराण)

चिदघन स्वरूप जो आदित्य वर्ण वाला और किशोर स्वरूप है जो कि परे धाम यानि परमधाम में विराजते हैं जो सत, चिद और आनन्दमयी हैं और जिसमें कोई विकार नहीं है वही सनातन है। सत्य की परिभाषा क्या है ? सत्य वो है जो तीनों काल में एक समान हो, जिसकी न तो कभी उत्पत्ति हुई हो और न कभी विनाश को प्राप्त हो, जो सदा सर्वदा एक रस हो उसे सत्य कहते हैं। सत्य वो नहीं जो परिवर्तन होता हो, जैसे एक बालक है कुछ समय पश्चात किशोर अवस्था को प्राप्त होता है धीरे-धीरे बुढ़ापे को प्राप्त होता है और मर जाता है। जब वो दिख रहा था तो सब उसको सत्य ही मानेंगे। सत्य था तो वो अब कहां गया ? इसको सत्य नहीं कह सकते, जो जन्मता और मरता हो उसे सत्य नहीं मान सकते। तो वो सत्य कौन है जिसकी हमें भक्ति करनी चाहिए ?

**श्रोता १—मुझे लगता है की हमें अपनी माता-पिता की सेवा और भक्ति करनी चाहिए, माता-पिता से बढ़कर संसार में कोई नहीं।** आप ने सही कहा हमें अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए, और उनके माता-पिता की भी करनी चाहिए और इस तरह से दादा-दादी, नाना-नानी के माता-पिता इस तरह से देखते जायेंगे तो मनुष्य की उत्पत्ति कहां से हुई मनु और सतरूपा से (जिसे बाइबल और कुरान में आदम और हवा कहा गया है)। तो अब हमें मनु और सतरूपा की भक्ति करनी चाहिए, अब मनु और सतरूपा को किसने उत्पन्न किया ब्रह्मा जी ने। अब हमें ब्रह्मा जी की भक्ति करनी चाहिए। लेकिन ब्रह्मा जी (विष्णु और शिव) की उत्पत्ति कहां से हुई ? आदि नारायण से, तो अब हमें आदि नारायण की भक्ति करनी चाहिए। लेकिन प्रश्न ये उठता है कि परमात्मा की जब भी व्याख्या होती है तो उसे अनादि शब्द से पुकारा जाता है उसे कहा जाता है की वह अनादि, अनंत, जन्म-मरण से रहित, अजर, अमर और अविनाशी है। तो इस तरह से पता चलता है की आदि नारायण भी वास्तव में परमात्मा नहीं है क्योंकि उनकी भी उत्पत्ति हुई है। परमात्मा की न तो उत्पत्ति होती और न ही लय होता है।

**प्रश्न—आदि नारायण को किसने उत्पन्न किया ?**

इस प्रश्न का उत्तर श्री प्राणनाथ वाणी में निहित है जिसमें श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि—

**अब लीला हम जाहेर करें, ज्यों सुख सैंयां हिरदे धरे ।  
पीछे सुख होसी सबन, पसरसी चौदे भवन ॥**

**(प्राणनाथ वाणी)**

अब मैं उस लीला के बारे में वर्णन करने जा रहा हूँ जिस को सुनके परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों और चौदे लोकों के प्राणियों को आनन्द और सुख मिलेगा ।

**अब सुनियो मूल बचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार ।  
नाहीं निराकार न ही शून्य, न निरगुन न निरंजन ॥**

**(प्राणनाथ वाणी)**

अब मैं उस समय की बात कर रहा हूँ जब मोह और अहंकार की उत्पत्ति नहीं हुई थी, और न निराकार, शून्य ही था, उस समय निर्गुण और निरंजन की भी उत्पत्ति नहीं हुई थी ।

**न ईश्वर न मूल प्रकृति, ता दिन की कहूं आपा बीती ।  
निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इच्छा मूल प्रकृत ॥**

**(प्राणनाथ वाणी)**

उस समय नारायण की उत्पत्ति भी नहीं हुई थी, मूल प्रकृति, महत्त्व और अहंकार भी नहीं था । ये बात उस समय की है जब असंख्यों ब्रह्माण्ड को अपने संकल्पमात्र से उत्पन्न करने वाले ब्रह्म के अन्दर अभी सृष्टि उत्पत्ति की इच्छा नहीं हुई थी । ब्रह्म और प्रकृति के द्वारा ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई । यहां ब्रह्म का तात्पर्य अक्षर ब्रह्म के मूल स्वरूप से नहीं बल्कि उनके चतुर्थ पाद मन स्वरूप अव्याकृत ब्रह्म से है जो अनादि और चेतन है ।

मूल प्रकृति मोह अहम थे, उपजे तीनों गुण ।  
सो पांचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन ॥

(प्राणनाथ वाणी)

प्रकृति भी दो प्रकार की है मूल प्रकृति और जड़ प्रकृति । अव्याकृत ब्रह्म के संकल्प को मूल प्रकृति कहते हैं । मूल प्रकृति से सत्व, रज और तम की साम्यावस्था वाली जड़ प्रकृति (कारण प्रकृति) उत्पन्न होती है । जड़ प्रकृति की साम्यावस्था भंग होने पर उसी से महतत्व (मोह) की रचना होती है । महतत्व से अहंकार उत्पन्न होता है । अहंकार से पांच सूक्ष्म भूत शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध उत्पन्न होते हैं । इन पांच सूक्ष्मभूत कणों के मेल से आकाश बनता है आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी तत्व की रचना होती है । इन तत्वों से असंख्यों लोक लोकान्तरों का निर्माण होता है ।

नैनों के पाव पल में इसारत, कई कोट ब्रह्माण्ड उपजत खपत ।  
इत खेल पैदा इन रवेस, त्रिलोकी ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

(प्राणनाथ वाणी)

इस तरह से अक्षर ब्रह्म के पाव पलक (एक पल के चतुर्थ अंश मात्र समय) में संकेत मात्र से करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते हैं और लय को प्राप्त होते हैं । इस तरह से हमारे चौदे लोकों जैसे करोड़ों चौदह लोकों के ब्रह्माण्डों की उत्पत्ति होती है और इन सारे चौदे लोकों के ब्रह्माण्ड में अनेकों ब्रह्मा, विष्णु और महेश उत्पन्न होते हैं ।

प्रकृति पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम ।

ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुण की परआतम ॥

(प्रकट वाणी)

इस तरह से अनेकों ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति होती है और उस प्रकृति तथा आदि नारायण का मूल स्थान सबलिक ब्रह्म (अक्षर ब्रह्म का तृतीय पाद) के स्थूल (अव्याकृत का महाकारण) में स्थित है ।

इस तरह से मूल प्रकृति से जड़ प्रकृति की उत्पत्ति होती है । इस जड़ प्रकृति में सबलिक ब्रह्म से चेतन तत्व आता है जो सारे जीवों के मूल में है । महाप्रलय के पश्चात सभी जीव महतत्व में स्थित उस चेतन तत्व जिसे विराट पुरुष, क्षर पुरुष, हिरण्यगर्भ और आदि नारायण भी कहते हैं उन में लीन हो जाते हैं ।

जब आदिनारायण की उत्पत्ति होती है तब वो संकल्प करते हैं कि **एकोहं बहुस्यामः** कि मैं एक हूँ अनेक हो जाऊँ । ऐसे संकल्प करते ही अनेक ब्रह्मा, विष्णु और शिव सहित अनेक ब्रह्माण्डों की उत्पत्ति होती है । इसी तरह का कथन बाइबल में भी आता है—

**In the beginning god created heavens and earth.**

**(Genesis 1:1)**

शुरू में परमात्मा ने स्वर्ग लोक और पृथ्वी की रचना की ।

रामायण में भी ये बात आती है कि इस क्षर ब्रह्माण्ड में अनेकों ब्रह्मा, विष्णु और महेश हैं—

नेति नेति जेहि बेद निरूपा, निजानंद निरूपाधि अनूपा ।  
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना, उपजहिं जासु अंश ते नाना ॥

**(रामचरितमानस बालकाण्ड)**

उपनिषदों, दर्शन ग्रंथों और ब्राह्मण ग्रंथों में नेति शब्द आया है । चार वेदों में नेति शब्द कहीं भी नहीं आया है । उपनिषदों के कथनों को देखकर संतो ने वेद के साथ नेति शब्द जोड़ दिया क्योंकि परमात्मा की तुलना किसी भी नश्वर पदार्थ से नहीं कर सकते । जब उस परमात्मा के बारे में वर्णन करने की बात आई तो यहां के मनीषियों ने कहा की “न इति, न इति” (ऐसा नहीं, ऐसा नहीं) श्री प्राणनाथ जी की वाणी भी कहती है की—

वर्णन करूँ अर्श का, ले मसाला इत का ।

**(प्राणनाथ वाणी)**

अब उस परमधाम का वर्णन हो रहा है लेकिन यहां के नश्वर पदार्थों का नाम लिया जा रहा है। पूछा जाये की परमात्मा कैसा है तो कहेंगे के अनंत सूर्यों से भी प्रकाशवान है। तो क्या परमात्मा सूर्य है ? नहीं, क्योंकि यह सूर्य तो जड़ है और परमात्मा तो चेतन है। उस परमात्मा के बारे में किस तरह से बताया जाये क्योंकि मनुष्यों को समझाने के लिए भाषा और शब्द तो यहीं के लेने पड़ेंगे। इसलिए ये तो कह सकते है कि अनंत सूर्यों से भी प्रकाशवान है लेकिन ये जड़ सूर्य नहीं, इस संसार की कोई भी वस्तु उस जैसी नहीं इसीलिए कहा गया “न इति न इति” ऐसा नहीं। क्योंकि उस परमात्मा के बारे में कोई भी व्याख्या नहीं कर सकता। जो परमात्मा स्वयं आनन्द का सागर है, संसार की सारी उपाधि जहां से लौट आती है, वही परमात्मा है। और उस परमात्मा के स्वाप्तिक स्वरूप आदि नारायण के अंश से अनेकों शिव, ब्रह्मा और विष्णु भगवान उत्पन्न होते है।

**ब्रह्मा विष्णु महेश लों, सो भी पैदा माया मोह अहंकार ।  
क्या दानव क्या देवता, क्या तीर्थकर अवतार ॥**

**(प्राणनाथ वाणी)**

ब्रह्मा, विष्णु और महेश जो आदि नारायण से उत्पन्न होते हैं वो सभी महा प्रलय के समय उन्हीं में समा जाते हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि इस ब्रह्माण्ड में अनेकों ब्रह्मा विष्णु और महेश हैं।

**प्रश्न—ये ब्रह्माण्ड कितना बड़ा है आधुनिक विज्ञान के दृष्टि में ?**

यदि हम कल्पना करें कि हम प्रकाश की गति से चल रहे हैं और हमारी यात्रा सूर्य से शुरु होती है। याद रखिये प्रकाश की गति १,८६,००० मील प्रति सेकंड है। हम जल्दी ही बुध (मरकरी), शुक्र (वीनस) को पार करेंगे। मात्र आठ मिनट उन्नीस सेकंड में हम पृथ्वी पर पहुंचेंगे जो सूर्य से नौ करोड़ तीस लाख (९,३०,००,०००) मिल की दूरी पर स्थित है इसी तरह से हम हमारे सौर मंडल के ग्रहों को

पार करेंगे। इस तरह से चलते हुए हम ५ घण्टे ३१ मिनट में यम (प्लूटो) और उसके चन्द्रमा तक पहुंचेंगे अभी तक हम ने ३.५ अरब मील की यात्रा पूरी की और अब हम सौर मंडल के आखरी छौर तक पहुंच गए अब यहां से हम सीधा ऊपर की ओर चलेंगे तो बहुत जल्दी ही हमारा सौर मण्डल गायब हो जायेगा।

अब इस खाली जगह में मात्र तारे ही दिखते हैं जो एक दूसरे से बहुत दूर स्थित हैं, इसी तरह से चलते हुए हमें एक साल, दो साल, तीन साल, चार साल बीत गए और प्रकाश की गति से चलते हुए हम चार साल तीन महीने और उन्नीस दिन के बाद हम अपने सौर मण्डल के सबसे नजदीक का तारा अल्फा सन्तौरी (Alpha Centauri) तक ही पहुंच पाये। अब तक हम २५ खरब मील चल चुके हैं और हम अपनी यात्रा की शुरुआत में ही हैं। दस प्रकाशवर्ष चलने के पश्चात जो तारे हम दूर-दूर देख रहे थे अब वो नजदीक दिखना शुरू होंगे। सौ प्रकाशवर्ष के बाद हम अपनी आकाशगंगा (Milky Way) के भुजा में गैस और धूल के बादल जिसे निहारिका (नेबुलास) कहते हैं दिखना शुरू होगा।

एक हजार प्रकाश वर्ष के बाद वो घेरा थोडा स्पष्ट रूप से दिखना शुरू होगा। एक लाख प्रकाशवर्ष चलने के पश्चात ही हमें हमारी पूरी आकाश गंगा दिखाई देने लगेगी। अब यहां से आगे चलेंगे तो हमें प्रकाश के बिंदु दिखाई देंगे जो तारे जैसे दिखते हैं लेकिन वो सारे तारे नहीं बल्कि पूरा आकाश गंगा है। एक आकाश गंगा में लगभग १० में २२ शून्य लगायें तो कितना होता है उतने ही तारें हैं। पचास लाख प्रकाशवर्ष चलने के पश्चात हम ऐसी जगह पर पहुंचेंगे जहां से हमारी आकाश गंगा (Milky Way) ५४ अन्य आकाश गंगाओं का समूह में दिखेगी जिसे स्थानिया आकाशगंगा समूह (Local Group) कहते हैं।

यह आकाशगंगा समूह भी एक बड़े आकाशगंगा समूह जिसे कन्या आकाशगंगा समूह (Virgo Cluster) के नाम से जाना जाता है, का एक भाग है। कन्या आकाशगंगा समूह में दो हजार से ज्यादा

आकाशगंगाये हैं और यह समूह छः करोड़ पचास लाख प्रकाशवर्ष चलने के पश्चात हमें दिखेगा ।

कन्या आकाशगंगा समूह भी एक विशालकाय आकाशगंगा समूह कन्या बृहद आकाशगंगा (Virgo Super Cluster) समूह का भाग है जिसमें कई आकाशगंगा समूह हैं । कन्या बृहद आकाशगंगा ११ करोड़ प्रकाशवर्ष की दूरी पर स्थित है । कन्या बृहद आकाशगंगा में १०० बड़े बड़े आकाशगंगाओं का समूह है और कुल सैंतालिस हजार (४७०००) आकाशगंगाओं का समूह है ।

वैज्ञानिकों के अनुसार कन्या बृहद आकाशगंगाओं जैसे करोड़ों आकाशगंगायें इस ब्रह्माण्ड में स्थित हैं । इस तरह से देखा जाये तो इस ब्रह्माण्ड में खरबों आकाशगंगायें हैं ।

नासा के वैज्ञानिकों ने २२/०२/२०१७ को हमारी आकाशगंगा (Milky Way) में हमारे जैसा ही एक और सौर मंडल का आविष्कार किया जिसको त्राप्पिस्ट १ (TRAPPIST – 1) नाम दिया गया है जिसमें कुल सात ग्रहों का पता चला है जो उस सौर मंडल के सूर्य की परिक्रमा करती है । सात में से तीन ऐसे ग्रह हैं जिस में पानी हो सकता है और इस वजह से जीवन की संभावनायें भी हैं । ये नया सौर मंडल हमारे सौर मंडल से लगभग ४० प्रकाशवर्ष की दूरी पर स्थित है ।

१२ जनवरी २०१२ को ब्रिटिश साइंस जर्नल नेचर (British Science Journal Nature) में प्रकाशित एक लेख में कहा गया है कि हमारी आकाशगंगा में दस खरब पृथ्वी जैसे ग्रह हैं ।

जब एक आकाशगंगा में इतने सारे ग्रह हैं तो कल्पना कीजिये खरबों आकाशगंगाओं में हमारे पृथ्वी जैसे कितने ग्रह होंगे जिसमें हम जैसे मनुष्य रहते हैं, इसका कोई हिसाब नहीं है ।

इससे ये सिद्ध होता है कि श्री प्राणनाथ जी वाणी में कही हुई बात सत्य है कि—

नैनों के पाव पल में इशारत, कई कोट ब्रह्माण्ड उपजत खपत ।  
इत खेल पैदा इन रवेश, त्रिलोकी ब्रह्मा विष्णु महेश ॥



अक्षर ब्रह्म के एक इशारे पर करोड़ों ब्रह्माण्ड बनते और मिटते हैं और उनसे भी परे है पूर्ण ब्रह्म सचिदानंद अक्षरातीत श्री राजजी । और हमारा कर्तव्य बनता है कि हम केवल और केवल उनकी ही भक्ति करें जिसकी भक्ति करने को सारे धर्मग्रंथों हमें आदेश देते हैं । अक्षर से परे होने से ही उनको अक्षरातीत, भाव से परे होने से भावातीत, शब्द से परे होने से शब्दातीत कहा गया है । इसीलिए ये प्रार्थना की गई है कि—

**असतो मा सदगमय ॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥ मृत्योर्मा  
अमृतम् गमय ॥**

ऋषि ये प्रार्थना करते हैं कि हम असत्य से सत्य की ओर जायें, अन्धकार से प्रकाश की ओर जायें और मृत्यु से अमरता की ओर जायें ।

आखिर उनको ऐसी प्रार्थना क्यों करनी पड़ी क्योंकि जब वेद के ज्ञान को लेकर ऋषि मुनि ध्यान में बैठते तो वो इस चौदे लोकों को पार कर के निराकार तक पहुंच पाते लेकिन उससे आगे नहीं जा सके क्योंकि वेद में कहा गया है **वेदाहमतं पुरुषं महान्तम आदित्य वर्णं तमसः परस्तात परमात्मा आदित्य वर्णं** वाला अन्धकार से रहित है, **शुक्रो असी भ्रजो असी** अर्थात् परमात्मा प्रकाश स्वरूप है, दिव्य है लेकिन निराकार में पहुंचने के पश्चात उन्हें ऐसा कुछ नहीं दिखा इसीलिए उन्होंने कहा कि हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलें, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलें और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलें ।

क्योंकि सत्य उसे कहते हैं, सनातन उसे कहते हैं जो अनादि काल से था और अनंत काल तक रहेगा । सनातन वो नहीं जो पेड़ पौधे, पत्थर, अग्नि, जल, वायु से लेकर हर देवी देवता की पूजा करे जो आज कल की प्रचलित मान्यता है । केवल पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी ही सनातन हैं और उनकी भक्ति करने वाले सनातन । जो आदि काल में पैदा हुआ और कुछ समय पश्चात लय को प्राप्त होगा उसे कैसे सनातन कहा जाये ?

हर हिन्दू पौराणिक आरती में ये गाता है की “तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति” वो ये तो नहीं कहता की तुम हो तेत्तीस कोटि अगोचर सब के प्राणपति । तो जब एक कह रहा है तो क्या हमें ये जानने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि वो एक कौन है ? देवी देवता गाते हैं कि कलिर्धन्य कलिर्धन्य कलिर्धन्ये महेश्वर यानि की इस २८वें कलियुग में जन्म लेने वाले मनुष्य बहुत ही भाग्यशाली हैं और ये भी कहते हैं,—

गायन्ति देवाः किल गीतिकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे ।  
स्वर्गापवर्गास्पद - मार्गभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

देवी देवता तो मनुष्य जन्म की महिमा गाते हैं क्योंकि मनुष्य योनि ही ऐसा योनि है जिस में यदि मनुष्य उस परमात्मा की भक्ति करे तो वो देवी-देवता से भी ऊपर का स्थान प्राप्त कर सकता है जो की देवी देवता को भी प्राप्त नहीं है । स्वर्ग के देवी देवता मनुष्य बनकर अखंड मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन कैसी विडम्बना, मनुष्य उन्हीं देवी-देवता की भक्ति करके स्वर्ग, वैकुण्ठ पाने के लिए लालायित रहता है । कोई स्वर्ग में कितने दिनों तक रह सकता है कहा गया है—

तेता भोगता स्वर्ग लोक विशालम, छीने पुण्य मृत्य लोक विसंती । स्वर्ग लोक विशाल है, सुख ही सुख है लेकिन कब तक वो सुख भोग सकते हैं, जितना आपने पुण्य अर्जन किया हो पृथ्वी में तब तक ही । उसके बाद फिर संसार में जन्म लेना पड़ता है, फिर दुःख, कष्ट सहने पड़ते हैं फिर पुण्य कमाओं और फिर स्वर्ग लोक जाओ ये चक्कर कब तक चलेगा, हमें इस चक्कर से निकलना होगा और उस अक्षरातीत की भक्ति करके अखंड मुक्ति को प्राप्त करना है, जिसे प्राप्त करने के पश्चात फिर जन्म मृत्य के चक्कर से छुटकारा मिलेगा ।

भागवत में चार प्रकार के प्रलय के बारे में वर्णन आता है वो है, नित्य प्रलय, नैमित्तिक प्रलय, प्राकृतिक प्रलय और महाप्रलय ।

प्रलय का अर्थ होता है संसार का अपने मूल कारण प्रकृति में सर्वथा लीन हो जाना । प्रकृति का ब्रह्म में लय (लीन) हो जाना ही प्रलय है । यह संपूर्ण ब्रह्मांड ही प्रकृति कही गई है । इसे ही शक्ति कहते हैं । जो जन्मा है वह मरेगा—पेड़, पौधे, प्राणी, मनुष्य, पितर और देवताओं की आयु निश्चित नियुक्त है, उसी तरह समूचे ब्रह्मांड की भी आयु है । इस धरती, सूर्य, चंद्र सभी की आयु है ।

**नित्य प्रलय**—इस संसार में जो जनमता है वो मरता भी है । जीवों की नित्य होने वाली मृत्यु को नित्य प्रलय कहते हैं । जो जन्म लेते हैं उनकी प्रतिदिन की मृत्यु अर्थात् प्रतिपल सृष्टि में जन्म और मृत्यु का चक्र चलता रहता है ।

**नैमित्तिक प्रलय**—ग्रह उपग्रह सूर्य इत्यादि सभी ब्लैक होल में लीन हो जाते हैं यह नैमित्तिक प्रलय है ।

**प्राकृतिक प्रलय**—प्राकृतिक प्रलय में निहारिकाओं का लय हो जाता है ।

**महाप्रलय**—जब महाप्रलय होता है तो सम्पूर्ण ब्रह्मांड का लय हो जाता है । तब कुछ नहीं बचता। तब फिर से वही स्थिति हो जायेगी ।

अब सुनियो मूल बचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार ।  
न निराकार न ही शून्य, न निर्गुण न निरंजन ॥

(प्राणनाथ वाणी)

न ईश्वर न मूल प्रकृत, ता दिन की कहूँ आपा बीती ।  
निजलीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इच्छा मूल प्रकृत ॥

(प्राणनाथ वाणी)

महाप्रलय में कुछ भी नहीं बचेगा, मोह और अहंकार भी नहीं होगा, निराकार, शून्य, निर्गुण और निरंजन भी नहीं रहेगा । उस समय नारायण भी नहीं रहेंगे, मूल प्रकृति, प्रकृति, महत्त्व और अहंकार भी नहीं रहेगा । अक्षर ब्रह्म के अन्दर जो सृष्टि रचना का संकल्प आया था

वो संकल्प फिर हट जायेगा तब जीव को कहां स्थान मिलेगा ? जरा इसके बारे में सोचिये की जो जीव स्वर्ग, वैकुण्ठ, आदि नारायण, निराकार को पाना चाहता था अब जब कुछ भी नहीं बचेगा तो वो जीव कहां जायेगा ?

क्या जीव को भी अखंड मुक्ति प्राप्त हो सकती है ? अनंत दया के सागर उस सच्चिदानंद परब्रह्म की कृपा से इस ब्रह्माण्ड के सभी जीवों को अखंड मुक्ति मिलेगी जिस की भविष्यवाणी धर्मग्रंथों में की गई है, जीव सृष्टि का उद्धार करने के लिए, उनको अखंड मुक्ति देने के लिए पूर्णब्रह्म अक्षरातीत का प्रकटन श्री प्राणनाथ जी के रूप में इस संसार में होगा, जिसके आने की बात हर कोई देख रहा है, आइये अब उसके बारे में जानते हैं ।

## द्वितीय अध्याय

धर्मग्रंथों में ध्यान से संबंधित बातें—

वैसे हिन्दू धर्म ग्रन्थों में तो ध्यान के सम्बन्ध में तो बहुत बातें लिखी गई हैं जो सब को विदित ही हैं। अब अन्य ग्रंथों की तरफ देखते हैं।

बाइबल में ध्यान से सम्बंधित बातें—

**For there is one God, and one mediator between God and men, the man Christ Jesus (1 Timothy 2:5)**

यहां हमें बाइबल के अनुसार यह पता चलता है कि परमात्मा एक है और येशु क्राइस्ट इन्सान है।

**So he was there with the LORD forty days and forty nights; he did not eat bread or drink water. And he wrote on the tablets the words of the covenant, the Ten Commandments. (Exodus 34: 28)**

येशु ने चालीस दिन और चालीस रात तक कुछ नहीं खाया, तब वो परमात्मा के साथ थे उनका ध्यान कर रहे थे और उसके बाद येशु ने दस धर्मद्वेष लिखें।

**After fasting forty days and forty nights, he was hungry. (Matthew 4:2)**

चालीस दिन उपवास करने के बाद वो (येशु) भूखे थे।

**And Isaac went out to meditate in the field toward evening. Genesis 24 : 63**

और संध्या के समय येशु ध्यान करने गए।

**On the glorious splendor of your majesty, and on your wondrous works, I will meditate. Psalm 145 : 5**

मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप पर और तेरे भांति-भांति के आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूंगा ।

**My eyes are awake before the watches of the night that I may meditate on your promise. Psalm 119 : 148**

मेरी आंखें रात के एक पहर से पहिले खुल गई, कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूं ।

साईं इतना दीजिये, जामें कुटुंम समाय ।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधू भी भूखा न जाये ॥

(कबीर वाणी)

इस पद में कबीर जी किस को पुकार कर कह रहे हैं ? वो साईं कौन हैं जिस को कबीर जी पुकार रहे हैं ?

राम और लक्ष्मण दोनों ने ध्यान किया, श्री कृष्ण ने भी ध्यान किया, ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देव ध्यान करते हैं, शिवजी तो हमेंशा ध्यान में रहते हैं, येशु ने भी ध्यान किया, गुरु नानक ने ध्यान किया, कबीरजी ने ध्यान किया । आखिर ये सब किस का ध्यान कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं यदि वो ही परमात्मा होते तो उनको ध्यान करने की आवश्यकता क्यों पड़ती ? यदि वो ध्यान करते हैं तो इसका आशय ये है कि इन सब से ऊपर भी कोई और है जिसकी तरफ ये सारे देव हमें ले जाना चाहते हैं ।

**प्रश्न—क्या परमात्मा दुखी होते हैं ? क्या वो रोते हैं ?**

रामायण के अरण्य काण्ड में ये बात आती है कि जब सीता का हरण होता है तब श्री राम बहुत दुखी होते हैं । रोते हुए बन में सीता को ढूँढते है । पेड़-पौधे लता पशु-पक्षी सबसे पूछते हैं कि सीता कहां है ।

रघुपति अनुजहि आवत देखी । बाहिज चिंता कीन्हि बिसेषी ।  
जनकसुता परिहरिहु अकेली । आयहु तात बचन मम पेली ॥

अनुज समेत गए प्रभु तहवां । गोदावरि तट आश्रम जहवां ।  
आश्रम देखि जानकी हीना । भए बिकल जस प्राकृत दीना ॥  
हा गुन खानि जानकी सीता। रूप सील ब्रत नेम पुनीता ।  
लछिमन समुझाए बहु भांति । पूछत चले लता तरु पांती ॥

(आरण्य काण्ड)

और ये भी वर्णन आता है कि लक्ष्मणजी श्री राम को सांत्वना देते है ।

ब्रह्मा वैवर्त पुराण में भी ये वर्णन आता है की जब सति की मृत्यु होती है तब शिवजी रोते बिलखते हुए सति के मृत शरीर को लेके घूमते हैं ।

बाइबिल में भी लिखा है—

“Jesus wept” (John 11: 35) “येशु रोये”

“In the days of his flesh, Jesus offered up prayers and supplications, **with loud cries and tears**, to him who was able to save him from death, and he was heard because of his reverence.” (Hebrews 5: 7-8)

अर्थात येशु जोर जोर से रोने लगे ।

अब प्रश्न यह है की क्या परमात्मा दुखी हो सकते हैं ? क्या परमात्मा रोते हैं ? जो किसी के वियोग में दुखी हो के रोते फिरते हैं क्या हम उनको परमात्मा कह सकते हैं ? क्योंकि परमात्मा न तो कभी दुखी होता है और न तो कभी रोता है । वो तो सदा आनन्द में रहते हैं ।

कुरान में अल्लाह को अनन्त कृपा करने वाला और बार-बार दया करने वाला बताया गया है । कुरान के हर अध्याय के पहले आयत यही कहती है ।

धर्मग्रंथों के अनुसार परमात्मा का सफेद घोड़े में आना

पुराणों में बताया गया है कि कलियुग का अंत करने भगवान कल्कि अवतरित होंगे। ऐसा कहा जाता है, वे एक सफेद घोड़े पर बैठ कर आएंगे।

वह परब्रह्म पुरुष निष्कलंक दिव्य घोड़े पर (श्री इन्द्रावती जी की आत्मा पर) बैठकर, निज बुद्धि की ज्ञान रूपी तलवार से इशक बन्दगी रूपी कवच और सत्य रूपी ढाल से युक्त होकर, अज्ञान रूपी म्लेच्छों के अहंकार को मारकर सबको जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर अखण्ड करेंगे। **भविष्योत्तर पुराण (प्र. ३ ब. २६ श्लोक १)**

Christ on a White Horse

**“Now I saw heaven opened, and behold, a white horse. And He who sat on him was called Faithful and True, and in righteousness He judges and makes war.**

**And He has on His robe and on His thigh a name written: KING OF KINGS AND LORD OF LORDS.”**  
**Revelation 19:11, 16 New King James Version (NKJV)**

अब मैंने उस परमधाम का रास्ता खुला देखा और वो रास्ता दिखाने वाला एक सफेद घोड़े के ऊपर बैठा हुआ है, वो विश्वासी और सच्चा है, और वो राजाओं का भी राजा है और भगवानों का भी परमात्मा है।

इसी तरह से कुरआन में भी इमाम मेहेंदी (आखरी इमाम) को सफेद घोड़े पर आने की बात लिखी गई है। अब प्रश्न ये होता है कि बाईबल, कुरआन और हिन्दू धर्म ग्रंथों में जिस परमात्मा को सफेद घोड़े में आने की बात कही गई है वो क्या अलग अलग है या एक ही है ?

परमात्मा की दृष्टि में कोई भेद भाव नहीं होता वो तो सब के लिए एक समान है। संसार के लोग उनको पहचाने इसीलिए अलग अलग ग्रंथों में एक ही तरह की बातें लिखी गई हैं ताकि संसार के मानव को ये पता चले कि वास्तव में परमात्मा कौन है और हमें किसकी भक्ति करनी चाहिए ? आखिर कौन है जो राजाओं का भी



राजा और भगवानों का भी परमात्मा है जो सफेद घोड़े में बैठकर आयेंगे ? वास्तव में सफेद घोड़े में परमात्मा के बैठ के आने का अर्थ होता है ज्ञान का स्वरूप जो अन्धकार रूपी अज्ञान को मिटाकर ज्ञान दे जिस के प्रकाश में सभी धर्म ग्रंथों के भेद खुल जायेंगे और जिस प्रकाश में उस रास्ते का पता चले जिस को आज तक अनेकों ऋष, मुनि, पीर, पैगम्बर, अवतारों ने खोजा पर वो उनको नहीं मिला । ज्ञान रूपी सफेद घोड़े पर बैठकर कल्कि स्वरूप, इमाम मेंहंदी, सेकेंड क्राइस्ट संसार के सारे जीवों को अखण्ड मुक्ति का दरवाजा खोल देंगे ।

## तृतीय अध्याय

### परब्रह्म का प्रकटन

हमने अब सभी धर्मग्रंथों के माध्यम से ये तो जान लिया है कि परमात्मा एक है और हमें उस एक परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए, अब हम धर्मग्रंथों की भविष्य वाणियों से जानने का प्रयास करेंगे कि कब उस परमात्मा का प्रकटन होगा ।

आवसी आवसी सब कोई कहे, विश्व मुखी करत बखान ।  
धनी मेरा प्रभु विश्व का, प्रकटी है परवान ।

(प्राणनाथ वाणी)

जो संसार परब्रह्म के प्रकटन की राह देख रहा है, वो परब्रह्म परमात्मा इस संसार में प्रकट हो चुके हैं ।

आरती में भी गाते हैं कि तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति ।

परमात्मा एक है, इस बाहरी आंख से दिखाई नहीं देते और सब के प्राणों के पति हैं । उन्हीं को प्राणनाथ कहते हैं ।

श्री प्राणनाथ निज मूल पति श्री मिहिरराज सुनाम ।

(प्राणनाथ वाणी)

हरिवंश पुराण में कहा गया है कि—

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ये ब्रह्मरूपिणः ।

उत्पन्ना ये कलौयुगे प्रधान पुरूषाश्रयाः ॥

कथायोगेन तान्सर्वान्पुजयिष्यन्ति मानवाः ।

यस्य पूजा प्रभावेन जीव सृष्टिः समुद्धरः ॥

(हरिवंश पुराण भविष्य पर्व अ. ४ श्लोक २१-२२)

अर्थात् कलियुग में कभी भी न प्रगट होने वाले वे ब्रह्म स्वरूप मुनि प्रगट होंगे, जो प्रधान पुरुष अक्षरातीत के आश्रय में ही रहेंगे ।

उनके द्वारा ब्रह्मज्ञान रूपी कथायोग का श्रवण करके सभी मनुष्य उनकी पूजा करेंगे । उस पूजा के प्रभाव से संपूर्ण जीवसृष्टि का उद्धार होगा ।

अब कबीरजी की बात करते हैं देखिये कबीर जी ने क्या कहा—

जा घर में अबला बसे, बहे प्रेम के पूर ।  
दास कबीरा यों कहे, सो घर हमसे दूर ॥

कबीर साहब ने ब्रह्मात्माओं को अबला शब्द प्रयोग करते हुए कहा कि, जिस धाम में वो रहते हैं, वहां तक मेरी पहुंच नहीं है । अर्थात् वो घर हमसे दूर है ।

चलते चलते पग थके, नगर रहा नौ कोश ।  
बीच में डेरा पड़ गया, कबीरा किन्हें देऊं दोष ॥

कबीरजी ध्यान में इस क्षर ब्रह्माण्ड को पार करके योगमाया के ब्रह्माण्ड में पहुंचते हैं लेकिन उसके आगे नहीं बढ़ पाते । योगमाया के ब्रह्माण्ड में अक्षर ब्रह्म का मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार आता है, इसे ही अव्याकृत, सबलिक, केवल और सतस्वरूप ब्रह्म कहते हैं । अक्षर ब्रह्म रहते तो परमधाम में हैं लेकिन उनकी लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड में होती है । कबीर जी योगमाया के ब्रह्माण्ड तक पहुंच सके यानि कि अक्षर ब्रह्म को जान सके लेकिन उसके आगे जो परमधाम है वहां तक नहीं पहुंच सके । नौ कोस कहने का तात्पर्य यह है कि अक्षरधाम और परमधाम की दूरी नौ लाख कोस है उसी को दर्शाने के लिए यहां नौ कोस शब्द का प्रयोग हुआ है ।

एक कबीर पंथी थे चिंतामणिजी जो अपने एक हजार शिष्यों को चर्चा सुनाया करते थे । एक दिन उनकी मुलाकात श्री प्राणनाथजी से होती है दोनों के बीच बातचीत होती है जब चिंतामणि जी कहते हैं

की आधा भक्त कबीर है पूरा भक्त कमाल । तो श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि कबीर जी का ज्ञान कितना महान है और कबीर जी का दोहा सुनाते हैं और उसका अर्थ बताते हैं—

एक पलक ते गंग जो निकसी, हो गयो चहु दिस पानी ।  
तिन पानी दोउ पर्वत ढापे, दरिया लहर समानी ॥

उड़ मक्खी तरुवर चढ़ बैठी, बोलत अमृत वाणी ।  
तिन मक्खी को मक्खा नाही, बिन पानी गर्भानी ॥

तिन गर्भे तीन गुणों जाये, वो तो पुरुष अकेला ।  
कहे कबीरा या पद को बूझे, सो सतगुरु मैं चेला ॥

इस पद का अर्थ अक्षरातीत परब्रह्म श्री राजजी के अलावा कोई नहीं खोल सकता । इस का अर्थ वही खोल सकता है जो परब्रह्म हो ।

इस पद को समझने के लिए परमधाम के उस प्रेम संवाद की तरफ हमें जाना होगा जब एक बार परमधाम में उस परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने ये इच्छा की—

**मैं देखाऊ अपना इश्क, और देखाऊ साहेबी ।**

**(प्राणनाथ वाणी)**

मैं अपनी आत्माओं को अपना प्रेम और साहेबी दिखाऊँ और ये तभी संभव था जब आत्मायें संसार में दुःख रूपी खेल को देखें ।

परमधाम में सत अंग अक्षर ब्रह्म है, आनंद अंग श्री श्यामाजी और सखियां हैं और चिदघन स्वरूप स्वयं श्री राजजी हैं । चितघन स्वरूप श्री राजजी आनंद की लीला को भी जानते हैं और सत की लीला को भी जानते हैं । लेकिन सत अंग अक्षरब्रह्म और आनंद अंग आत्मायें एक दूसरे की लीला को नहीं जानते थे ।

परमधाम की आत्मायें परमधाम में सुख, सत्य, चेतनता, आनन्द, प्रेम, जीवन, उमंग, एक दिली से लबालब भरी हुई थी उन्हें

इस संसार के असत, जड़, दुःख, छल, कपट, भेद आदि के बारे में कुछ नहीं पता था, और अक्षरब्रह्म ये नहीं जानते थे की आत्मायें चितघन स्वरूप श्री राजजी के साथ कैसी लीला करती हैं। ये संसार बनाने का काम अक्षर ब्रह्म करते हैं।

**कोट ब्रह्माण्ड नज़रों में लेवे, छिन में देख के पल में उड़ावे।**

**(प्राणनाथ वाणी)**

अक्षरब्रह्म का काम ही यही है कि हमारे चौदे लोकों जैसा करोड़ों ब्रह्माण्ड को बनाना और उनका लय करना, लेकिन परमधाम की आत्मायें अक्षरब्रह्म के इस लीला के बारे में नहीं जानती थी और कभी भी अक्षर ब्रह्म को नहीं देखा था। अब एक दिन राजजी की इच्छा से आत्माओं ने अक्षर ब्रह्म को देखा, तब परमधाम की आत्माओं ने राजजी से पूछा की ये जो पुरुष हम देख रहे हैं जो आप के जैसे दिखते हैं वो कौन हैं ? राजजी ने कहा की वो अक्षर ब्रह्म है फिर आत्माओं ने पूछा की वो क्या करते हैं ?

राजजी ने उत्तर दिया कि वो दुःख रूपी खेल बनाते हैं, अब आत्माओं को अक्षर ब्रह्म द्वारा रचित दुःख रूपी खेल देखने की इच्छा हुई और अक्षर ब्रह्म को राजजी और आत्माओं के बीच होने वाली प्रेम की लीला देखने की इच्छा हुई। इसी को दोउ पर्वत (श्यामाजी और अक्षर ब्रह्म) का ढापना कहा गया है अर्थात् चिदघन स्वरूप की इस इच्छा रूपी गंगा में सत अंग (अक्षर ब्रह्म) और आनंद अंग (आत्मायें) रूपी पर्वत डूब गये। राजजी ने जो इच्छा की थी वो पूरे परमधाम में फैल गई इसी को चहुं दिस पानी कहा गया है।

परब्रह्म की आदेश शक्ति ने संसार रूपी वृक्ष में बैठकर धर्म ग्रंथों के रूप में ज्ञान की बातें कही इसी को अमृत वाणी कहा गया है। उस आदेश शक्ति का कोई स्वामी नहीं है परन्तु उसने अपने संकल्प से मूल प्रकृति रूपी गर्भ को धारण किया जिससे सत, रज और तम तीन गुणों की उत्पत्ति होती है लेकिन वो पारब्रह्म परमात्मा तो इन सब से

न्यारा ही है। कबीर जी कहते हैं कि जो इस पद का अर्थ बतायेगा वो मेरा सतगुरु और मैं उनका शिष्य हूँ।

अब चिन्तामणि जी के होश उड़ जाते हैं क्योंकि उनके गुरु ने उन्हें कहा था कि एक ऐसा समय आयेगा जब तुम्हारी मुलाकात अक्षरातीत परब्रह्म से होगी और वो तुम्हें इस दोहे का अर्थ समझायेगे तो तुम समझना कि वही परब्रह्म हैं। जब श्री प्राणनाथ जी के मुख से उपर्युक्त दोहे का अर्थ चिन्तामणि जी समझते हैं तो वो अपने एक हजार शिष्यों के साथ प्राणनाथ जी की शरण में आते हैं।

पुराण संहिता में कहा गया है—

अगाधाज्ञानजलधौ पतितासु प्रियासु च ।

स्वयं कृपामहाम्भोधौ ममज्ज पुरुषोत्तम ॥

(३१/५०)

अज्ञानता के अगाध सागर में प्रियाओं के गिर जाने पर प्रियतम परब्रह्म स्वयं अपने कृपा रूपी महासागर में स्नान करायेगे अर्थात् स्वयं प्रकट होकर अपने अलौकिक ज्ञान से उन्हें जाग्रत करेंगे।

**भावार्थ**—ब्रह्मसृष्टियों के संसार में प्रकटन का वर्णन पहले ही किया जा चुका है। इस श्लोक से अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन सुनिश्चित होता है।

सुन्दरी चेंदिरा सख्यौ नामाभ्या चंद्रसूर्ययोः ।

मायान्धकारनाशाय प्रति बुद्धे भविष्यत ॥

(३१/५२-७०)

परमधाम की आत्मायें सुन्दरी और इन्दिरा (श्यामा जी और इन्द्रावती जी) जिन दो तनों में प्रकट होंगी, उनके नाम चन्द्र और सूर्य (देवचन्द्र और मिहिरराज) होंगे। दूसरे शब्दों में सुन्दरी और इंदिरा परमधाम की वे दो सखियां जो चन्द्रवंश और सूर्यवंश में अवतरित होंगी तथा इनके अन्दर साक्षात् परब्रह्म विराजमान होकर लीला करेंगे, जिससे माया के अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश हो जाएगा।

एवं प्रबुद्धा सर्वासां स्वप्रियेण प्रबोधिता ।

सुन्दरी सुभगा काचित्सर्वा सम्बोधयियति ॥ (३३/१५५)

इस प्रकार अपने प्रियतम के द्वारा जाग्रत की हुई सभी सखियों में से कोई सुन्दरी नामक भाग्यशालिनी सखी सबको जाग्रत करेगी ।

साहाय्यमिन्दिरायाश्च लब्ध्वा कार्यं करिष्यति ।

स्वामिनी वासना साक्षादाविष्टा सुंदरी मनः ॥ (३४/४३)

तस्मादवेहि मार्गेऽस्मिसुन्दरीमेव सदगुरुम् । (३४/४९)

वह सुन्दरबाई इन्दिरा की सहायता प्राप्त करके जागनी करेगी । सुन्दरी के मन में साक्षात् स्वामिनीजी की ही सूरता प्रवेश करेगी । इस प्रकार इस जागनी के मार्ग में सुन्दरी को ही सदगुरु माना गया है ।

बृहद्सदाशिव संहिता

आनन्द रूपा याः सख्यो ब्रजे वृन्दावने स्थिताः ।

कलौ प्रादुर्भविष्यन्ति पुनर्यास्यन्ति तत्पदम् ॥

(बृहत् सदाशिव संहिता श्लोक १७)

परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा जो सखियां ब्रज और वृन्दावन में स्थित थीं, वे कलियुग में पुनः प्रकट होंगी और जाग्रत होकर पुनः अपने उस धाम में जायेंगी ।

चिदावेशवती बुद्धिरक्षरस्य महात्मनः ।

प्रबोधाय प्रियाणां च कृष्णस्य परमात्मनः ॥

मुक्तिदा सर्व लोकानां भविता भारताजिरे ।

प्रसरिष्यति हृद्देशे स्वमिन्या प्रभुणेरिता ॥

(बृहत् सदाशिव संहिता श्लोक १८-१९)

चिदघन स्वरूप परब्रह्म के आवेश से युक्त अक्षर ब्रह्म की बुद्धि अक्षरातीत की प्रियाओं को जाग्रत करने के लिए तथा सम्पूर्ण लोकों को मुक्ति देने के लिए भारतवर्ष में प्रकट होगी । वह प्रियतम के द्वारा

स्वामिनी (श्री श्यामा जी) के हृदय में स्थापित किए जाने पर चारों ओर फैलेगी ।

**भावार्थ**—श्री श्यामा जी (श्री देवचन्द्र जी) को साक्षात्कार के साथ ही अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के द्वारा जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ । तत्पश्चात् श्री श्यामा जी व अक्षरातीत परब्रह्म का आवेश इन्द्रावती जी के हृदय में विराजमान हो गया तथा उनके द्वारा ब्रह्मवाणी का प्रकटन व जागनी करके उन्हें 'श्री प्राणनाथ जी' की शोभा प्राप्त हुई । इस प्रकार दोनों ही तनों से श्री श्यामा जी ने ही लीला की ।

**श्रीमद्भागवत्**

देवापिः शंतनोभ्राता मरुश्चेक्ष्वाकुवंशजः ।

कलाप ग्राम आसते, महायोग बलान्वितौ ॥

ताविहृत्य कलेरन्ते, वासुदेवानुशिक्षितौ ।

वर्णाश्रमयुतं धर्मं, पूर्ववत् प्रथयिष्यतः ॥

(१२/२/३७-३८)

शान्तनु के भाई देवापि तथा इक्ष्वाकु वंशीय राजा मरु इस समय कलाप ग्राम में स्थित हैं । वे दोनों महान योगबल से युक्त हैं । परमात्मा की प्रेरणा से वे दोनों कलियुग में पहले की ही भांति धर्म की स्थापना करेंगे ।

**भावार्थ**—उपरोक्त तीनों ग्रन्थ एक दिशा में ही संकेत कर रहे हैं । परमयोगी देवापि के जीव ने श्री देवचन्द्र (चन्द्र) के रूप में जन्म लिया । उनके अन्दर परमधाम की श्री श्यामा जी (सुन्दरी) की आत्मा ने प्रवेश किया । अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी के साक्षात्कार के पश्चात उन्होंने आत्माओं की जागृति के लिए निजानन्द सम्प्रदाय का संस्थापन किया ।

परमयोगी राजा मरु के जीव ने श्री मिहिरराज (सूर्य) के रूप में जन्म लिया । उनके अन्दर परमधाम की श्री इन्द्रावती जी (इन्दिरा)



की आत्मा ने प्रवेश किया। सम्वत् १७३५ में हरिद्वार में सर्वसम्मति से हिन्दू धर्म के सभी सम्प्रदायों के आचार्यों ने उन्हें 'विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक' माना। इस प्रकार परब्रह्म अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने अपना नाम व सारी शोभा श्री इन्द्रावती जी को दे दी।

### भविष्योत्तर पुराण

महीतले च म्लेच्छनां राज्यवंशः प्रवर्तते ।

परस्परे विरोधे च अवरडाख्यो भवेद्यदा ॥

ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्रीकृष्ण गंगा को बताते हैं कि कलियुग में एक स्वर्ण युग होगा जिसकी शुरुआत कलियुग के ५,००० वर्ष बाद होगी। यह भविष्यवाणी भारत के संदर्भ में नहीं, बल्कि संपूर्ण धरती के संदर्भ में है।

ब्रह्मा जी ने कहा—हे नारद ! भयंकर कलियुग के आने पर मनुष्य का आचरण दुष्ट हो जाएगा और योगी भी दुष्ट चित्त वाले होंगे। संसार में परस्पर विरोध फैल जायेगा। द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) दुष्ट कर्म करने वाले होंगे और विशेषकर राजाओं में चरित्रहीनता आ जायेगी। देश-देश और गांव-गांव में कष्ट बढ़ जायेंगे। साधु लोग दुःखी होंगे। अपने धर्म को छोड़कर लोग दूसरे धर्म का आश्रय लेंगे। देवताओं का देवत्व भी नष्ट हो जायेगा और उनका आशीर्वाद भी नहीं रहेगा। मनुष्यों की बुद्धि धर्म से विपरीत हो जायेगी और पृथ्वी पर म्लेच्छों के राज्य का विस्तार हो जायेगा।

विक्रमस्य गतेऽब्दे सप्तदशाष्टत्रिकं यदा ।

तदायं सच्चिदानन्दो अक्षरात्परतः परः ॥

भारते चेंदिरायां स बुदः आविर्भविष्यति ।

स बुद्ध कल्किरूपेण क्षात्र धर्मेण तत्पर ॥

जब हिन्दू तथा मुसलमानों में परस्पर विरोध होगा और औरंगजेब का राज्य होगा, तब विक्रम सम्वत् १७३८ का समय होगा। उस समय अक्षर ब्रह्म से भी परे सच्चिदानन्द परब्रह्म की शक्ति

भारतवर्ष में इन्द्रावती आत्मा के अन्दर विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप में प्रकट होगी ।

**चित्रकूटे वने रम्ये स वै तत्र भविष्यति ।**

वह चित्रकूट के रमणीय वन के क्षेत्र (पद्मावतीपुरी पन्ना) में प्रकट होंगे । वे वर्णाश्रम धर्म (निजानन्द) की रक्षा तथा मंदिरों की स्थापना कर संसार को प्रसन्न करेंगे । वे सबकी आत्मा, विश्व ज्योति पुराण पुरुष पुरुषोत्तम हैं । म्लेच्छों का नाश करने वाले बुद्ध ही होंगे और श्री विजयाभिनन्द नाम से संसार में प्रसिद्ध होंगे । (उ.ख.अ. ७२ ब्रह्म प्र.)

**माहेश्वरतन्त्रम्**

**आविर्भावाच्च लीलाया द्वापरान्ते कलौ युगे ।**

**असहिष्णुः स्वप्रियाणां दुःखलीलानुदर्शनम् ॥ (२६)**

**तसामेकां च परमां सुभगां सुन्दरीं प्रियां ।**

**प्रबोधयिष्यतितरां कथयित्वा विनिर्णयम् ॥ (२२/२७)**

द्वापर के अन्त होने पर कलियुग में लीला के आविर्भाव होने से, परब्रह्म अपनी प्रियाओं की दुखपूर्ण लीला को न सहते हुए, उनमें से एक परम सौभाग्यशालिनी सुन्दरी नाम की प्रिया को अपना ज्ञान देकर प्रबोधित करेंगे । (२२/२७)

सिख पंथ के 'पुरातन सौ साखी' (भविष्य की साखियां) ग्रन्थ का पृष्ठ ६५-६६

**नेह कलंक होय उतरसी, महाबली अवतार ।**

**संत रक्षा जुग जुग करे, दुष्टा करे संहार ॥**

**नवां धरम चलावसी, जग में होवन हार ।**

**नानक कलजुग तारसी, कीर्तन नाम आधार ॥**

**भविष्य दीपिका ग्रन्थ**

**शालिवाहन शाका तु गत षोडशकं शतम ।**

जीवोद्धाराय ब्रह्मांडे कल्किः प्रादुर्भविष्यति ॥ (अ० ३)

‘भविष्य दीपिका’ ग्रंथ के अनुसार शाक शालिवाहन के १६०० वर्ष व्यतीत हो जाने पर (विक्रम संवत् १७३५) संपूर्ण जीवों के उद्धार के लिए इस ब्रह्मांड में ‘कल्कि’ का आगमन होगा। (अध्याय-3)

**सुन्दरी तन्त्र**

पद्मावती और केन नदी के मध्य विंध्याचल पर्वत के एक क्षेत्र में इन्द्रावती नामक परब्रह्म की आत्मा होगी। उनके अंदर परब्रह्म सच्चिदानंद विराजमान होकर पूर्ण ब्रह्म कहलाएंगे। वे प्राणियों का उद्धार करेंगे। कल्कि पुराण हिन्दुओं के विभिन्न धार्मिक एवं पौराणिक ग्रंथों में से एक है। यह एक उपपुराण है। इस पुराण में भगवान विष्णु के 10वें तथा अंतिम अवतार की भविष्यवाणी की गई है और कहा गया है कि विष्णु का अगला अवतार (महा अवतार) ‘कल्कि’ अवतार होगा। इसके अनुसार कलियुग के अंत के समय में कल्कि अवतार लेंगे।

**बुद्ध गीता में कहा गया है—**

वाराह कल्प के अट्टाईसवें कलियुग के प्रारम्भ में ही श्री बुद्ध जी का यह स्वरूप प्रकट होगा। तब सर्वत्र ही अपने और पराये का यह भेद नहीं हो सकता है ॥१२॥

**अक्षरातीत एषो वै पुरुषो बुद्ध उच्यते ।**

**तेजोमयश्चादिरुपस्तस्यावतार उच्यते ॥१७॥**

श्री विजयाभिनंद बुद्ध ही अक्षरातीत है जो तेजोमय परब्रह्म का स्वरूप है।

**बुद्धो वै कल्कि रूपोसावीश्वरं च परात्परम ।**

**ज्ञान पार प्रापयिता संभविष्यति निश्चितम् ॥२३॥**

ये निश्चित है कि वे कल्कि स्वरूप ईश्वर या आदि नारायण को भी परमधाम का परम ज्ञान देने वाले होंगे।

संसार के सभी धर्मग्रन्थ रूपी लाखों जिह्वायें होते हुए भी (मर्मज्ञ होते हुए भी) सबके आश्रय स्वरूप वह बुद्ध जी तुतली (बोलचाल की सामान्य) भाषा में अपना ज्ञान (श्री कुलजम स्वरूप) देने वाले होंगे ।

**प्रासाद पतनं चैव तीर्थानां च यदाप्युत ।**

**तदा बुद्धो भविष्येत हीति में निश्चया मतिः ॥३४॥**

जब यवनों (मुसलमानों) के द्वारा मन्दिरों को गिराया जाने लगेगा तथा तीर्थों की महिमा भी कम होती जायेगी, तब श्री बुद्ध जी का प्रकटन होगा । ऐसी मेरी निश्चित मति है ।

**बुद्ध स्तोत्र**

कलियुग के प्रथम चरण में वह सच्चिदानन्द परब्रह्म अचानक ही ज्ञान रूप से प्रकट होंगे, जिनके ज्ञान को प्राप्त करके तुम स्वयं भी ज्ञानमयी हो जाना ॥५॥

**बाइबल में कहा गया है—**

From the Lord Himself shall descend from heaven with a shout, with the voice of an archangel, and with the trump of God: and the dead in Christ shall rise first” (1 Thessalonians 4:16).

बाइबल के इस कथन में जाग्रत बुद्धि के फ़रिश्ते इस्राफील को परब्रह्म की तुरही कहा गया है । अर्थात् द लार्ड (श्री प्राणनाथ जी) जब इस दुनिया में आयेंगे जो उनके साथ आत्मा को झकझोरने वाली तेज आवाज अर्थात् निज बुद्धि का ज्ञान (श्री कुलजम स्वरूप), हुक्म की शक्ति तथा इस्राफील फरिश्ता होगा । मरे हुए लोगों के दुबारा जीवित होने का यह अर्थ है कि परब्रह्म के दिए हुए जाग्रत ज्ञान को पाकर वे अपनी तथा अक्षरातीत परब्रह्म की वास्तविक पहचान कर लेंगे ।

जिस तरह से बाइबल में बताया गया था परमात्मा उसी तरह से इस संसार में आये, प्रधान दूत की आवाज भी सुनाई दिया किस तरह से १८७५८ चौपाइयों के रूप में और उस एक अक्षरातीत

पूर्णब्रह्म परमात्मा में विश्वास रखने वालों ने सबसे पहले उनके दिये हुए ज्ञान को स्वीकारा। तुरही की आवाज क्या है जाहेरी तुरही नहीं बल्कि जागृत बुद्धि का ज्ञान इस्राफील रूपी तुरही की आवाज जो कुलजम स्वरूप ग्रन्थ में निहित है।

परब्रह्म के साथ इस्राफील तथा हुक्म की शक्ति होने से यह स्पष्ट होता है कि बाइबल के अनुसार भी परब्रह्म के इस नश्वर जगत में प्रकट होने का वही समय सम्वत् १७३८ या हिजरी १०९० या ईस्वी १६९१ है जो हिन्दू धर्मग्रन्थों तथा कुरआन में लिखा है।

**साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान।**

**सो साहेदी किन ना लई, हाय हाय मगज न पाया कुरान ॥**

**(प्राणनाथ वाणी, खि. १२/३३)**

कुरान में लिखे हुए इस कथन के रहस्य को किसी ने भी नहीं समझा कि कियामत के समय खुदा की साक्षी देने वाला खुद खुदा होगा। हाय ! हाय ! कितने शोक की बात है की कुरआन की इस साक्षी को लेकर संसार के लोगों ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को नहीं पहचाना।

कुरान के पार: एक (१) सूर: दो (२) अलिफ लाम मीम आयत १०५-१०७ में यह वर्णन है कि खुदा की साक्षी देने वाला स्वरूप उनके तदोगत (वैसा ही) होगा। कुरआन में एहिया के नाम से भी उस स्वरूप को परिभाषित किया गया है।

**अब जरा बहाई मत को देखते है**

जिस तरह से अभी हम ने देखा की परब्रह्म के प्रकटन की बहुत सारे धर्म ग्रंथों में साक्षियां हैं और उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बहाई मत वाले मानते हैं की उनका प्रकटीकरण हो चुका है, वो उनको दो स्वरूप में मानते हैं एक का नाम बाब (अली मुहम्मद) और दूसरे तन का नाम बहाउल्लाह (मिर्जा हुसेन) है।

ये मानते हैं की पहले परमात्मा की शक्ति बाब में आई उस के बाद बहाउल्लाह में । इस मत को मानने वाले कुरआन को आधार मान के जिस में लिखा है की मुहम्मद साहिब के जाने के हजार साल बाद परमात्मा का आना लिखा है और ये भी लिखा है की परमात्मा दो तनों में लीला करेंगे वो दो तन ये बाब और बहाउल्लाह में घटाते है । बाब का जन्म २० अक्टूबर १८१९ में हुआ था और बहाउल्लाह का जन्म १२ नवम्बर १८१७ में हुआ था । बहाउल्लाह का जन्म पहले हुआ था बाब का बाद में लेकिन ये मानते हैं कि परमात्मा की शक्ति पहले बाब में आई उस के बाद बहाउल्लाह में ।

पर यदि हम देखें कि कुरआन में जिस दसवीं और ग्यारहवीं सदी में परमात्मा का प्रकटन लिखा है वो बाब और बहाउल्लाह में घटित नहीं होता । क्योंकि हिजरी सन तब से प्रचलित हुआ जब मुहम्मद साहिब मक्को से मदीना गए तब था ईस्वी सन् ६२२, अब बाब का जन्म ईस्वी सन् १८१९ में हुआ था और बहाउल्लाह का जन्म ईश्वी सन् १८१७ में हुआ था जो की हिजरी सन् १२३५ और १२३३ था जो कि दसवीं और ग्यारहवीं सदी में परमात्मा का प्रकटन की भविष्य वाणी से बहुत दूर है । यदि हम उनके जन्म साल में से ६२२ घटा देते है तब भी (१७१९-६२२) १०९७ और (१७१७-६२२) १०९५ होता है । वो दसवीं और ग्यारहवीं सदी में प्रकट नहीं हुए थे । दोनों का जन्म ग्यारहवीं सदी के अन्त में हुआ था । क्योंकि हिजरी साल में कुछ दिन कम होते हैं इसीलिए १ सदी में कुछ साल हिजरी सन के ज्यादा होते हैं ।

लेकिन जब हम इसी बात को यदि निजानन्द दर्शन में घटाते हैं, क्योंकि निजानन्द दर्शन भी मानता है कि परमात्मा का प्रकटन दो तनों में हुआ था और वो दो तन श्री देवचन्द्रजी और श्री मिहिरराज जी का है (मिहिरराज जी ही विक्रम सम्वत १६३८ (सन १७२५) के बाद प्राणनाथ जी के नाम से जाने गए) । अब देखिये देवचन्द्र जी का जन्म विक्रम सम्वत १६३८ में हुआ था जो की हिजरी सन ९८९ था और ईस्वी सन् १५८१ था । अब मिहिरराज जी का जन्म विक्रम सम्वत

१६७५ (हिजरी सन १०२८, ईस्वी सन् १६१८) में हुआ था। इस तरह से देखा जाये तो हिजरी सन् ९५९ और हिजरी सन् १०२८ दसवीं और ग्यारहवीं सदी सिद्ध होता है।

विक्रम सम्वत १७३५ का वो समय था जब हरिद्वार में कुम्भ के मेले में श्री प्राणनाथ जी का शास्त्रार्थ विभिन्न हिन्दू सम्प्रदाय के आचार्य जनों से होता है। जिस शास्त्रार्थ में सभी सम्प्रदाय के आचार्य गण साधु सन्तों ने प्राणनाथ जी को श्री विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक स्वरूप घोषित किया और सबने ये माना कि जो सारा हिन्दू समाज कल्कि स्वरूप के प्रकटन की बाट देख रहा है वो और कोई नहीं बल्कि श्री प्राणनाथ जी ही है। यही साल शालिवाहन साका के १६०० वर्ष का था जिस की भी भविष्य वाणी की गई थी की शालिवाहन साका के १६०० वर्ष में कल्कि स्वरूप का प्रकटन होगा।

विक्रम सम्वत १७३५ हिजरी सन का १०८९ वर्ष था। इस तरह से देखा जाये तो श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी के रूप में परब्रह्म का प्रकटन दसवीं और ग्यारहवीं सदी सिद्ध होता है।

### बौध मत

बौध मत में भी ये मान्यता है कि भविष्य में मैत्रेय बुद्ध का प्रकटन होगा जो पूर्ण ज्ञान स्वरूप होगा और जो सच्चे धर्म की शिक्षा देंगे और उनको कोई भी पराजित नहीं कर सकता। मैत्रेय का संस्कृत में अर्थ होता है जो सबसे प्यारा और करुणामयी।

मैत्रेय का सबसे पहले उल्लेख में से एक संस्कृत पाठ है, “मैत्रेय-व्याकरण” (“मैत्रेय की भविष्यवाणी”) में कहा गया है कि देवता, पुरुष और अन्य प्राणियों मैत्रेय की पूजा करेंगे और वो अपना संदेह खो देंगे, वे लालच नहीं करेंगे, दुःख के महासागर को वो पार करेंगे और मैत्रेय की शिक्षाओं के परिणामस्वरूप, वे पवित्र जीवन का नेतृत्व करेंगे। अब वे किसी चीज़ को अपना नहीं मानेंगे, उनके पास कुछ नहीं होगा, कोई सोना या चांदी नहीं, घर नहीं, कोई रिश्तेदार नहीं। वे मैत्रेय के मार्गदर्शन में शुद्धता की पवित्र जीवन व्यतीत करेंगे और उनको खुशियां ही खुशियां मिलेगी।

मैत्रेय का उल्लेख त्रिपिटिका के दीघनिकायपाली में भी है।

ऐन रोकोतोप्फ़ के द्वारा लिखित “फाउंडेशन ऑफ़ बुद्धिइसम” नामक किताब में गौतम बुद्ध और उनके अनुयायी आनन्द के बीच हुए संवाद में लिखते हैं कि—

बुद्ध कहते हैं कि मैं पहला बुद्ध नहीं हूँ जो संसार में आया। न ही मैं आखरी हूँ। समय आने पर दूसरे बुद्ध इस संसार में आयेंगे जो पवित्र होगा, पूर्ण ज्ञान का स्वरूप होगा, आचरण में ज्ञान के साथ संपन्न, शुभ, ब्रह्मांड को जानने, पुरुषों के एक अनुलनीय नेता, देव गणों और मनुष्यों का स्वामी। वह आपको उसी अनन्त सत्य का खुलासा करेगा जो मैंने आपको सिखाया है। वह अपने धर्म का प्रचार करेंगे, अपने उद्भव में महिमावान, और लक्ष्य पर गौरवशाली होगा। वह एक धार्मिक जीवन का प्रचार करेंगे, पूरी तरह से परिपूर्ण और शुद्ध, जैसे मैं घोषणा करता हूँ।

आनन्द ने कहा, हम उन्हें कैसे जानेंगे? बुद्ध ने कहा वो मैत्रेय नाम से जाने जायेंगे।

बौद्ध मत में जिन मैत्रेय बुद्ध का उल्लेख है वो और कोई नहीं बल्कि विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक स्वरूप श्री प्राणनाथ जी ही है क्योंकि उनकी असीम कृपा के कारण इस ब्रह्माण्ड के सारे जीवों को अखंड मुक्ति का वरदान मिला। जिनको कोई नहीं हरा सका इसीलिए उनको कहा गया विजयाभिनंद अर्थात् विजय जिसका अभिनन्दन करे। और जिनके दिखाए हुए मार्ग का अनुसरण करके संसार के मनुष्य अखंड मुक्ति को प्राप्त करेंगे और अथाह आनन्द में डूब जायेंगे।

परमात्मा और आत्माओं में प्रेमी प्रेमिका (पति पत्नी) का भाव अभी तक हम ये सुनते आये हुए हैं कि परमात्मा पिता है और हम सब उनके बच्चे। लेकिन कहीं-कहीं परमात्मा को पति और आत्माओं को पत्नी के रूप में भी चित्रित किया गया है। निजानन्द दर्शन का भी यही मत है कि परमात्मा पति है और हम सब आत्मायें उनकी पत्नियां।



वेद में किस तरह से परमात्मा और आत्माओं में पति-पत्नी का भाव दर्शाया गया है आइये देखते हैं ।

नहि ते नाम जग्राह नो अस्मिन् रमसे पतौ ।

परामेव परावत सपत्नी गमयामसि । ।

(अथर्ववेद ३-१८-३)

यहां ये भाव दर्शाया गया है कि अविद्या या माया को मैं आत्मा ग्रहण नहीं करती और तू मेरे प्रियतम परब्रह्म में कभी भी रमण नहीं करती । तू माया रूपी सौत को मैं आत्मा दूर ही दूर हटाती हूं क्योंकि पति और पत्नी के अटूट प्रेम में बाधक के रूप में पत्नी कदापि सहन नहीं कर सकती । उसका उद्देश्य उस सौत को हटाकर प्रियतम को प्राप्त करना होता है ।

अह्मस्मि सहमानाथो त्वमसि सासहि ।

उभे सहस्वती भूत्वा सपत्नी मे सहावहै ॥

(अथर्ववेद ३-१८/५)

ब्रह्मविद्या द्वारा आत्मा प्रियतम का सानिध्य प्राप्त करने में बाधक माया का परित्याग होता है और आत्मा अपने एक मात्र पति अनादि अक्षरातीत को पा लेती है ।

बाईबल में भी परमात्मा को दूल्हा और आत्मा को दुल्हन के रूप में दर्शाया गया है ।

Let us rejoice and exult and give him the glory, for the marriage of the Lamb has come, and his Bride has made herself ready. (Revelation 19:7)

यहां ये बात दरसाई गई है जब दुल्हन (आत्मा) अपने आप को शादी के लिए तैयार कर के दुल्हे (परब्रह्म) के साथ खुशियां मनायेगी ।

इसी तरह से सोलोमन के गीत में आत्मा को बधू और परमात्मा को प्रियतम के रूप में दर्शाया गया है ।

## चतुर्थ अध्याय

### अखंड मुक्ति के आठ स्थान

क्या देखि रे ये दुनिया, जो इनको न करू अखंड ।

(प्राणनाथ वाणी)

श्री प्राणनाथ जी की अपार मेहेर और कृपा के कारण, जो जीव महा शुन्य से पैदा हो कर उसी में विलय हो जाते थे अब उन जीवों को भी अखंड मुक्ति का उपहार मिल गया । अब इन जीवों को भी जन्म-मरण के चक्कर में नहीं पड़ना पड़ेगा । श्री प्राणनाथ जी की कृपा से इस संसार में पैदा हुए सारे जीवों को अखंड मुक्ति मिलेगी ।

जैसे पहले भी बताया जा चुका है कि गीता में जो तीन प्रकार के पुरुषों के बारे में बताया गया है ।

**द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।**

**क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥**

**उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मत्युदाहृतः ।**

ये तीन पुरुषों के तीन अलग अलग ब्रह्माण्ड हैं । अभी तक जिस ब्रह्माण्ड के बारे में बताया गया वो क्षर ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत आता है जिसे क्षर पुरुष का ब्रह्माण्ड या कालमाया का ब्रह्माण्ड कहा गया है । दूसरा ब्रह्माण्ड है अक्षर ब्रह्म का जिसे योगमाया का ब्रह्माण्ड कहते हैं, अक्षर ब्रह्म रहते तो परमधाम में हैं पर उनकी लीला योगमाया के ब्रह्माण्ड में होती है और तीसरा है अक्षरातीत पूर्णब्रह्म का परमधाम । इन तीन ब्रह्माण्डों में तीन अलग-अलग प्रकार की लीला होती है । कालमाया के ब्रह्माण्ड में कोई भी नई वस्तु उत्पन्न होती है और लय को भी प्राप्त होती है । योगमाया के ब्रह्माण्ड में कोई नई वस्तु उत्पन्न तो हो सकती है लेकिन लय नहीं होगी और परमधाम में कोई नई वस्तु न तो कोई वस्तु उत्पन्न होती है न लय को प्राप्त होती है, परमधाम में हर वस्तु में सदैव नवीनता बनी रहती है लेकिन वो नई नहीं है, वहाँ न

तो कोई नई वस्तु का प्रवेश हो सकता है न ही कोई चीज को निकाला जा सकता है इसीलिए उसे कहते हैं—

**पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।  
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥**

**(वृहदारण्यक उपनिषद्)**

वह परब्रह्म पूर्ण है और उस परमधाम में एक कण से लेकर सम्पूर्ण परमधाम पूर्ण है। वो तो अनंत है और अनंत में अनंत को जोड़ दिया जाये, गुना, भाग या घटाया जाये तब भी वो पूर्ण ही रहता है। उस में कोई कमी नहीं रहती। इसीलिए उस ब्रह्म को पूर्ण ब्रह्म कहा जाता है क्योंकि वो हर तरह से पूर्ण है।

इन तीनों ब्रह्माण्डों में तीन प्रकार की सृष्टि है। तीन अलग-अलग ब्रह्माण्ड हुए तो सृष्टि भी तीन प्रकार की है वो इस प्रकार है जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि। ब्रह्मसृष्टि परमधाम से आई है, ईश्वरीसृष्टि योगमाया के ब्रह्माण्ड से आई हुई है और जीवसृष्टि कालमाया के ब्रह्माण्ड में उत्पन्न हुई है। ब्रह्मसृष्टि को आत्मा कहते हैं। ईश्वरीसृष्टि को भी आत्मा कहा जा सकता है।

जीव और आत्मा में भेद है जीव जन्म और मरण के चक्कर में पड़ता है, सुख दुःख का भोग करता है। आत्मा जीव के ऊपर बैठकर संसार की लीला को देखती है, जीव को पाप और पुण्य का फल भोगना पड़ता है, आत्मा कर्म बंधन में नहीं फंसती। जीव को अखंड मुक्ति प्रधान होगा, आत्मा तो अपनी जगह पे लौट जायेगी।

**भी कहूं वेवारा जीव आत्मा की, याके जुदे जुदे ठाम ।  
जीव का घर है नीद में, वासना घर श्री धाम ॥**

**(प्राणनाथ वाणी)**

जीव और आत्मा के बारे में जानने के लिए एक उदाहरण लेते हैं। एक नाविक है उसकी नाव में यात्री आकर बैठते हैं वो यात्री को नदी पार करवाता है। समझ लीजिये वो नाव शरीर है, नाविक जीव

और जो यात्री आके बैठता है वो आत्मा है । इस शरीर रूपी नाव में, जीव रूपी नाविक और यात्री रूपी आत्मा बैठी है ।

अपने-अपने कर्म के हिसाब से जीव को आठ प्रकार के अखंड मुक्ति स्थान प्रधान किये गये हैं वे आठ प्रकार के मुक्ति का स्थान ऊपर से नीचे तक इस प्रकार का है—

**आठवां मुक्ति स्थान**—ये मुक्ति स्थान उनके लिए है जो न तो किसी की भक्ति करते हैं, न ही कोई शुभ कर्म करते हैं । नीच से नीच व्यक्ति से लेकर सारे पशु पक्षी कीड़े मकौड़े सारे प्राणी को यहां पे अखण्ड मुक्ति मिलेगी ।

**सातवां मुक्ति स्थान**—ये मुक्ति स्थान उनके लिए है जो कुछ भक्ति करते हैं, शुभ कर्म करते हैं ऐसे मनुष्यों को यहाँ पर अखण्ड मुक्ति मिलेगी ।

**छठवीं मुक्ति स्थान**—बिना तारतम ज्ञान पाए बाल स्वरूप श्री कृष्ण जी के आराध्य भक्तों को ये मुक्ति स्थान मिलेगा । चैतन्य महाप्रभु, बल्लभाचार्य जी आदि को यहां पर अखंड मुक्ति मिलेगी । अक्षर ब्रह्म की पञ्च वासना (विष्णु भगवान, शिव भगवान, सनकादिक ऋषि, सुखदेवजी और कबीरजी) का भी ये अखंड मुक्ति स्थान है ।

**पांचवां मुक्ति स्थान**—ये स्थान उनको प्राप्त हुआ है जो जीव जब अक्षरातीत श्री राजजी बाल स्वरूप श्री कृष्णजी ११ वर्ष ५२ दिन वाले स्वरूप के तन में विराजमान हो कर ब्रज की लीला कर रहे थे उन सब ब्रजवासियों को ये मुक्ति स्थान प्राप्त हुआ है और अभी जो मनुष्य तारतम ज्ञान पा कर के ११ वर्ष ५२ दिन वाले बाल स्वरूप श्री कृष्ण जी की अखंड भक्ति करते हैं उन जीवों को भी ये अखंड मुक्ति स्थान प्राप्त होगा ।

**चौथी मुक्ति स्थान**—ये मुक्ति स्थान अखंड रास खेलने वाले ब्रज के जीवों को प्राप्त है और उनको भी प्राप्त होगा जो मनुष्य तारतम ज्ञान पा कर किशोर स्वरूप वाले श्री कृष्ण जी की अखंड भक्ति करते हैं ।

(श्री रणछोड़ जी वीर जी द्वारा लिखित, ५ श्री प्राणनाथ मिशन, श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर, हकिकत नगर द्वारा दिसम्बर १९८६ में प्रकाशित 'श्री सृष्टि विज्ञान वर्णन' नामक ग्रन्थ में पेज संख्या ६३ में भी ये बात लिखी गई है कि पांचवां मुक्ति स्थान उन जीवों को प्राप्त होगा जो जीव तारतम्य ज्ञान द्वारा इसको धारण कर चिन्तन करेंगे और पृष्ठ संख्या ६५ में भी ये बात स्पष्ट रूप से लिखी गई है की तारतम्य ज्ञान ग्रहण करके धर्म सन्मार्ग पर चलने वाले कृष्ण प्रणामियों को सबलिक ब्रह्म के निर्मल चेतन अर्थात् अखण्ड रास में मुक्ति मिलेगी ।) (गुरुजी प्रणामी मिशन ट्रस्ट, मंगलधाम कलिम्पोंग एवं श्री कृष्ण प्रणामी प्रतिष्ठान मुक्ति धाम, इटरी, नेपाल द्वारा सन १९९६ में प्रकाशित 'मंगल सूक्ति' नामक ग्रन्थ में मंगल सूक्ति संख्या २११ में भी इस बात की और संकेत किया गया है की जो बाल रूप श्री कृष्ण को भजेगा वो यशोदा बनेगा और जो किशोर रूप श्री कृष्ण को भजेगा वो गोपी बनेगा)

अब प्रश्न ये है कि गोपी और यशोदा कहां पर अखण्ड हुए है ? वो तो पांचवीं और चौथी मुक्ति स्थान में अखण्ड हैं । इसीलिए ये स्पष्ट है कि श्री कृष्ण की भक्ति करके हम चौथी बहिश्त से आगे नहीं जा सकते ।)

**तीसरा मुक्ति स्थान**—ये मुक्ति स्थान उनको प्राप्त होगा जो कुरआन के सही अर्थ को लेके एक परमात्मा की भक्ति करते हैं ।

**दूसरा मुक्ति स्थान**—ये मुक्ति स्थान उन जीवों को प्राप्त होगा जिन जीवों के ऊपर ईश्वरी सृष्टि की आत्मा विराजमान है और वो जीव यदि श्री प्राणनाथ जी के दिखाए हुए मार्ग पर चलेंगे तो उनको यहां पर अखंड मुक्ति मिलेगी ।

**पहला मुक्ति स्थान**—ये मुक्ति स्थान उन जीवों को प्राप्त होगा जिन के ऊपर परमधाम से आई हुई आत्मायें विराजमान हैं । ये मुक्ति स्थान प्राप्त करने के लिए इन जीवों को प्राणनाथ जी के बताये मार्ग पर चलना होगा और निरंतर ध्यान चितवनि वाणी मंथन करना होगा तभी इन जीवों को पहला मुक्ति स्थान प्राप्त होगा ।

अब जो जीव पहला मुक्ति स्थान प्राप्त करेंगे वो जीव हूबहू परमधाम की आत्माओं का संगार सज कर बैठेंगे । मिहिरराज जी का जीव राजजी का रूप लेगा और देवचन्द्र जी का जीव श्यामा जी का रूप लेगा । अब दूसरे से लेकर आठवीं बहिस्त तक जो भी जीव पहुंचे होंगे उन सभी जीव पहली बहिस्त में पहुंचे मिहिरराज जी के जीव और देवचन्द्र जी के जीव को ही राजजी श्यामा जी मानेंगे और उनकी भक्ति करेंगे ।

ऐसा हुआ न होसी कबहू, धनी हमें ऐसी शोभा दई ।  
सब पूजे प्रतिबिम्ब हमारे, सो भी बहिस्त में अखंड भई । ।

(प्राणनाथ वाणी)

बहिस्त में पहुंचने के पश्चात हमें चाहकर भी श्री राजजी और श्यामाजी का दर्शन नहीं हो सकता, अब तो मिहिरराज जी और देवचन्द्र जी का जीव ही राजजी श्यामा जी है । अब हमारे हाथ में अवसर है कि हम जीते जी मूल स्वरूप श्री राजजी का दर्शन कर सकें जिस से हमारा जीवन सफल हो ।

अब ये हमारे हाथ में ही है कि हमें कहां जाना है इसीलिए सोच विचार कीजिये ताकि जो अवसर हमें मिला है उसका हम लाभ उठा सके और पहली बहिस्त में जगह बना सके ।

ये सारे बहिस्त योगमाया के ब्रह्माण्ड में हैं और उसके पार है अखंड परमधाम, जहां पर आत्मायें इस संसार के खेल देखने के बाद फिर से लौट जायेगी ।

श्रोता १—मुझे लगता है आपने जो ज्ञान सुनाया ये ज्ञान एक दिन सारे संसार के मनुष्य ग्रहण करेंगे । ऐसा ज्ञान तो मैंने कभी नहीं सुना था । मैं अपने आप को भाग्यशाली मानता हूं की मुझे ऐसा ज्ञान सुनने को मिला ।

आप ने इस ज्ञान को समझा इसके लिए धन्यवाद ।